

छन्दोर्णवपिङ्गल ॥

श्रीमत्सकलकविकुलसरसिजवनप्रकाशनदिवाकर
श्रीरामचन्द्रभक्तिप्रकाशितान्तःकरण प्रतापगढ़
देशीय ट्योंगाग्रामवासि भिषारीदासकृत

जिसमें

मात्रावृत्त, वर्णवृत्त, मेरु, मर्कटी, पताका और प्रतिछन्द
लघु, गुरु, गणस्थापनरीति और अतिरमणीयछन्दों
के उदाहरण हिन्दी भाषा कवित्व रसिकों के उप-
कारार्थ अतिसुगमता से वर्णित हैं

छठवींबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

नवम्बर सन् १९०२ ई० ॥

४ जुज़ ६ वर्क़ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ छन्दोर्णवपिङ्गल ।

॥ त्रिभङ्गीछन्द ॥

करिवदनविमंडितओजअखंडितपूरणपंडितज्ञानपरं। गिरिनन्दिनिनन्दनअसुरनिकन्दनसुरउरचंदनकीर्त्तिकरं। भूषणभृगलक्षणवीरविचक्षणजनप्रणरक्षणपाशधरं। जयजयगणनाथकखलगणघायकदासहायकविघनहरं १ ॥ दण्डकछन्द ॥ एकरदहैनशुभ्रशाखाबढ़िआईलंबोदरमेंनिवेकतरुजोहैशुभ्रवेशको। शुंडादंडकैतवहथ्यारुहैउदंडयहराखतनक्लेशअघबिघनअशेशको। मदकहोंभूलिनभ्रतसुधासारयहध्यानहींतेहिकोहदहरणकलेशको। दासयहनिजनविचारोतिहूंतापनिकोदूरकरनेकोवारोकरणगणेशको २ ॥ छप्पै ॥ श्रीविनतासुतदेखिपरमपटुताजिन्हकीन्हेउ। छन्दभेदप्रस्तारवरणिज्ञातनिमनलीन्हेउ। नष्टोदिष्टनिआदिरीतिबहुविधिजिनभाख्यो। जैवोचलतजनायप्रथमवाचापनराख्यो। जोछन्दभुजंगप्रयातकहिजातभयोजहँथलअभय। तिहिपिंगलनागनरेशकीसदाजयतिजैजैतिजय ३ ॥ दोहा ॥ जिनप्रकट्योजगमेंबिबिधछन्दनामअभिराम ॥ ताहिविष्णुरथकोकरोंबिबिकरजोरिप्रणाम ४ ॥ कवित्त ॥ अभिलाषाकरीसदाऐसनिकाहो

यमित्रथेसबठौरहिनसलयाहीसेवाल्प्रणप्रानि । लोभ्रुठ
ईली चेशीनहलाहुलहीकोअंसु अंतहैक्रिआपलालिनिंद्रार
सहीकोखाति । सेनापतिदेवीकिरशोभागवतीकोभूपप्रा
मोतीहीराहेमसौदाहांसहीकोजाति । हीथपरदेवपूरवदेश
शरहैनाउँखगासनलगधरसीतिानाथकोलापालि ५ ॥ दोहा ॥
याकोविल अंतरबरणलैतुकंतहैछंडि । दासनामकुलयाम
कहिनामग्रंथालिरसमंडि ६ । प्राकृतभाषासंस्कृतलखिबहु
छन्दोग्रंथ । दासकियोछन्दोरणवभाषारचिशुभपंथ ७ ॥
चिलया ॥ दासगुरुलघुगोदहदहगनाथलिभेदतिउच्चारिजा
नै । जानैगनागलकोफलमत्तबरनप्रथारनिकोकरिजानै । न
ष्टउदिष्टरुमेरुपताकबिमर्कटिसूचिनकोभरिजानै । वृत्ति
औजातिसमुक्तकदंडकछन्दमहोदधिसोतरिजानै ८ ॥

इति श्रीदासकृतेछन्दोर्णवेमंगलाचरण
वर्णनंनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

अथ गुरुलघुविचार ॥

छप्पै ॥ ई ऊ आ ये आदि स्वर वरणमिले हूएहू बिंदु
युक्त औ संयुक्तपरगुरु बंकरवांचि । अ इ उ क कि कु ऐसे
घु सूधे बिधि कीन्होकहति अक्षरनिजोरसना शुतहि ना
चि । रहलये संयुक्त वरणन्हपरेनमानिनित्यैगुरुलहुलहै
गुरु कोगुरुवैबांचिएकमत्तलहुभनिगुरुकोदुमत्तगानिया
हीमेंउदाहरण हेरिले हृदयमें यांचि १ ॥ प्राकृतेयथा ॥ औ
रे रेवाहहिकान्हनावछोटि डगमगकुगतिनदेहि । तैइथनै
संतारिदे जोचाहहि सोलेहि २ ॥ दोहा ॥ कहुंकहुं सुकवि
तुकंतमें लघुकोगुरुगनिलेत ॥ गुरुहूकोलघुगनतहैं स

मुक्तसुमतिसचेत ३ ॥ गुरुकोलघुयथा ॥ संस्कृते श्लोक ॥ अद्यापिनोज्झतिहरःकिलकालकूटं कूर्म्मोविभर्तिधरणीं खलुपृष्ठकेन ॥ अंभोनिधिर्वहतिदुःसहवाडवाग्निमंगी कृतंसुकृतनः परिपालयंति ४ छन्दबसंततिलकहै या के तुकमें गुरु चाहिये लघुहै गुरुगनिबो ॥ लघुकोगुरुयथादेश को ॥ कवित्त ॥ पीछेपंखाचँवरवारीज्योंकीत्योंसुगंधवारीठा ढीबायेंघायेंघनफूलनिकेहारगहे । दाहिनेअतरऔरअ मरतमोरैलीन्हेसामुहेलपेटेलाजभोजनकेथारगहे । नितं केनियमहितूहितके विसारेदेवचित्तकेबिसारे बिसरायेस बबारिपहे । संपाघनबीचऐसीचम्पावनबीचफूलीडारि सीकुवँरिकुंमिलातिफूलीडारगहे ५ ॥ तिलक ॥ छन्दरूप घनाक्षरीहैयाकेतुकंतमेंलघुचाहियेगुरुहै सोलघुहीगनि बो ॥ लघुनाम ॥ दोहा ॥ शंखमेरुकाहलकुसुमकरतलदण्ड अशेख ॥ शब्दगंधबरसरपरसनामललहुकोदेख ६॥ गुरु नाम ॥ किंकिनिनूपुरहारफनिकनकचौंरताटंक । कोऊरो कुण्डलबलयगोमानसगुरुबंक ७ ॥ दुकलनाम ॥ नगनदुक लहैभेदसोप्रथमनामगुरुजानि । निजप्रियसप्रियपरम प्रियपियबियलघुहिबखानि ८॥ऽ०॥ आदिलघुत्रिकलनाम ॥तो मरतुमरपत्तसरधुनचिरुचिह्नचिराल। पवनबलटपटआ दिलघुत्रिकलनूतकीमाल ९ । ऽ । ० ॥ आदिगुरुत्रिकलनाम ॥ तूरसमुदनिर्बानकरतालोसुरपतिनन्द । नामआदिगुरु त्रिकलकोपटहतालअतचन्द १० ॥ त्रिकलनाम ॥ नारीरस कुलभामिनीतंडवभासप्रमान ॥ नामत्रिलघुकोजानिपु नित्रिकलहिटगनबखान ११ ऽऽ० ॥ डुद्युरुनाम ॥ सुनति रसिकरसनागपुनि कहिमनहरणसमान ॥ कुन्तीपूतासु

रबलयकरनदोइगुरुजान १२ ऽ० ॥ अन्तगुरुचौकलनाम ॥ कमलातनकरबाहुभुजभुजअभरणअभिराम ॥ गजअ भरणप्रहरणअसनिचकलअंतगुरुनाम १३।ऽ।भूपति गजपतिअश्वपतिनायकपौनमुरारि ॥ चक्रवतीसुपयो धरो मध्यगुरूकलचारि १४।ऽ। गंडदहनबलभद्रपद नूपु रजंघापाइ। तातपितामहआदिगुरु चौकलनामसुभाइ १५ ॥। ॥। त्रिप्रपंचसरपरमपद शिखरचारिलघुजाति। डगनचकलकहिचौकलहिंगजरथतुरँगपदाति १६॥।०॥ पंचकलनाम ॥ ०।ऽऽ सुरनरिन्दउडपतिआहित दंतीदंतत लंप। मेघगगनगजआदिलघुपंचकलहिकहिझंप १७ ऽ।ऽ पक्षिबिड़ालमृगेन्द्रअहि अमृतजोधलकलक्ष। बी नगरुड़कहिमध्यलघु पंचकलहिप्रतक्ष १८॥ पंचकलकक्रम तेनाम ॥ इन्द्रासनबीरोधनुष हीरोशेखरफूल। अहिपाइ कगनिक्रमहिते नामपंचकलतूल १९ ॥ ठगनपकलपँ चकलहिकहिठगनषटकलहिलेखि। ताहिछकलकेक्रम हिंतेभेदतेरहोदेखि २० ॥ षटकलकेनामप्रतिभेदक्रमते ॥ हरश शिसूरजशक्रअरु शेषोअहिकमलाखि। ब्रह्मकिंकिणी बंधुध्रुवधर्म्मशालिचरभाखि २१ ॥ अथवर्णगन ॥ म न य भ गण शुभचारिहैं र स ज त अगुनोचारि। मनुज कवितके प्रथमतुक कीजैइन्हैं बिचारि २२॥ मतिगुरुन तिलघुभादिगुरुयादिलघूशुभदानि। महि अहि शशि जलक्रमहिते इष्टदेवताजानि २३॥ ज गुरुमध्य रो मध्य लघु स गुरुअंततलअंत। इतेअशुभगणरबिअगिनि प वनखदेवकहंत २४॥ त्रिगुणबिचार ॥ मनहित यभजन ज तहिउद रसारिपुउरअवरेखि। कवितआदिकुगणहिरपे

द्विगुणविचारहिदेखि २५ जनहितअतिनीकेतकहुरिपु उदासमिलिमन्द। रिपुउदासहीजोपरै तौसबभांतिकुवन्द २६ ॥ इतिश्रीदासकृतेछन्दोर्णवेगुरुलघुगणागणवर्णनोनामद्वितीयस्तरंगः २ ॥

॥ अथमात्राप्रस्तारवर्णनम् ॥

॥ सतकलप्रस्तार ॥ सवैया ॥ द्वै द्वै कलानिकोबंधबनैपहिले उबरेलघुआदिकरोजू। भेदबढैनेकोशीशकेआदिगुरू केतरेलघुएकधरोजू। औरयथाप्रतिपंक्तिखचैबचेपीछे गुरुलघुलेखिभरोजू। याहीविधानतेसर्वलघूलगिपूरणसत्तप्रथारधरोजू १ ॥ प्राकृतेयथा ॥ पटमगुरुहेठ्ठठाणेलहुआ परिठवेहु। अपबुद्धिएसरिसासरिसापंतीउधरियागुरुलघूदेहु २ ॥ दोहा ॥ भयोजानिप्रस्तारको क्रमसोंदीजे अंक। संख्यातछ्टउदिष्टकीकीजैउदरनिशंक ३ इतनेकल केभेदहैंकितनोपूछैकोइ ॥ पूर्वयुगलसरिअंकदैजानैसंख्याहोइ ४ ॥ पूर्वयुगलअंक ॥ दण्डक ॥ जैकलकोभेदकोऊपूछैतेतीकलाकीजैताकेपरअंकदीजैक्रमहीतेएकदोइ। एकदोयजोरितीन लिखिलीजै तीजेपरतीनिदोइजोरिआगे खैचिलिखिजियजोइ। दशपांचपीछेतीनिजोरिआगेआठलिखि याहीविधिलिखेजैयकहांलौंबतावैकोइ। जितनीकलाकेपरजेतोअंकपरैयह जानिलीजैतेतपरप्रस्तारकोअन्तहोइ५ सतकलरूपेयथा ॥ १ २ ३ ५ ८ १३ २१ ॥ अथनष्टलक्षणं ॥ दोहा ॥ इतिअंकपरहोतहैभेदकहाकेहिरूप। उत्तरहेतयहिप्रश्नकेनष्टरच्योअहिभूप ६ ॥ अथमात्रानष्टकीअनुक्रमणी ॥ दण्डक ॥ जैकलमेंभेदपूछैतेतनीयेकलाकीजै तापैलिखिपरबयगल

अंकलीजिये । पूछ्योअंकअन्तमेंघटाइबाकीहाथराखि
तामेंलिखेअंकनिघटैवेरसभीजिये । जौनयामेंघटैकरोता
केतरआगिलीकलालै गुरुद्वासबचैयोंहीफिरिकीजिये । री
तेपस्योबीतेनष्टकर्मबाकीलघुहीहै पूछ्यो जिनतिनकोदे
खाइरूपदीजिये ७ ॥ अस्यतिलकं ॥ काहूपूछ्योसप्तकलमेंद
शयोंरूपकैसो ताकेप्रश्नकोअंकदशसौइक्कीससेघट्योबा
कीरहेग्यारहतामेंतेरहनहींघटे तौ आठघट्योसोतेरहकी
तरकीकलालैकेगुरुभयो बाकीरहे तीनि तामेंतीनिहीं
घट्यो सोपांचके तरकीकलाको लैकेगुरु
भयो और रस दुहूं ओर लघुही रह्यो
ऽऽ।० ॥ अथमात्राउद्दिष्टलक्षणं ॥ कुण्डलिया ॥ कहि
ये केतेअंकपर दासरूप यहिसाज । करि
उदिष्टताकोउतर देनकह्यो अहिराज ॥
देनकह्यो अहिराज पूर्वजुअलंककलनि
पर । लघुके शीशहि शीशगुरुके ऊपरहू
तर ॥ पुनिगुरुशिरको अंकजोरिकैठीकहि
गाहिये । अंतअंक सुघटाइबचै बाकीसो
कहिये ८ ॥ (१ २ ३ ८ २१ / । । ऽ ऽ । / ५ १३) ॥ अस्यतिलकं ॥ सप्त
कलमें यहरूपलिखिपूछ्योजोकौनसोहै ।
ताकेपरअंकदियोहै गुरुकेशिर तीनिऔ
आठपस्यो सो ग्यारह इक्कीसमें घट्यो
बाकीदशयोभेदहै ॥ अथमात्रामेरुलक्षण ॥ दोहा ॥
कितेएक गुरुयुक्त हैं कितेहैं ति गुरुयुक्त ।
ताकोउत्तरमेरुकरि देहुअहीपति उक्त ९ ॥
अनुक्रमणी ॥ चौपाई ॥ द्वैकोठादोहरोलिखिलीजै ।

।ऽऽऽ	१
।।।ऽऽ	३
ऽऽ।ऽ	४
।।ऽ।ऽ	५
।ऽ।।ऽ	६
ऽ।।।ऽ	७
।।।।।ऽ	८
ऽऽऽ।	९
।।ऽऽ।	१०
।ऽ।ऽ।	११
ऽ।।ऽ।	१२
।।।।ऽ।	१३
।ऽऽ।।	१४
ऽ।ऽ।।	१५
।।।ऽ।।	१६
ऽऽ।।।	१७
।।ऽ।।।	१८

।ऽ।।।।	१९
ऽ।।।।।	२०
।।।।।।।	२१

तातरदोहरोतीनठवीजै॥तातरदोहरोचारिबनायो।औजितचाहोतितोबढ़ायो१० कोठनिआदिबिषमजोपैये।एकैएकआंकलिखिजैये॥ समकोठनिकी आदि जोपरो। द्वौतिचारियहिक्रमतेभरो ११ पंक्तिअन्त इकइकलिखिआवो। तबरीतनभरिबोचितलावो॥ शिरअंकेतेसुशिरपरअंके।जोरिभरहुक्रमतेनिरशंके १२पहिलोकोठदुकलकीजानै। द्वितियत्रिकलकीबातबखानै॥ यहिविधिकरै भेदसबजाहिर। चहहुतोजाहुअंकदैबाहिर॥ छठयेंचारिकोष्ठजोपरै।समकलहिउलटैउद्धरै॥ सबलहुएकएकगुरुछहै। दशदुगचारित्रिगुरुयुतरहै१३सबलहुअंतअकेअहिउक्त। चलिगतिबामकहोगुरुयुक्त॥ यहिविधिकरीजितेकोचह्हो। सकलजोरिसंख्याहूगहो १४॥ पताका॥दोहा॥ कह्योजिते गुरुयुक्ततुम तेहैंकिहिकिहिठौर। उतरहेतइहिप्रश्नकेरचेपताकाडोर १५॥ पताकाकी अनुक्रमणी॥जैकलकीपताकजियलायो। खण्डमेरुताकोअलगायो॥ ताहीसंख्याकोठाकरिये। नामपताकापांतीधरिये॥ अरिल्ल॥ पुरुबजुअलसरिअंकभिन्नलिखिदेखिये। अन्तअंकइतअन्तकोठतेहिरेखिये॥ तामहिंक्रमतेइकइकअङ्कघटाइये। वाढिगअधतेदुतियप्रतिलिखिजाइये॥ तृतियपंक्तिमें द्वै द्वै जोरिकमीकरो। चौथेपंक्तिमेंतीनितीनिचितमेंधरो॥ इनभांतिन प्रतिपंक्तिएकबढ़िअंकजू। घटेपताकारूपलिखोनिरशंकजू १६

षट्मात्रामेरु

		१	१
		२	१
	१	३	१
	३	४	१
१	६	५	१
४	१०	६	१

दो० ॥ गणनाहोइनहीनक्रम आयोअङ्कनआउ । करिपताकप्रस्तारमेंसबगुरुयुक्तदेखाउ १७ द्वैकितीनिगुरुयुत

पताकाप्रस्तार ॥

।।।ऽऽ ३
।।ऽ।ऽ ५
।ऽ।।ऽ ६
ऽ।।।ऽ ७
।।ऽऽ। १०
।ऽ।ऽ। ११
ऽ।।ऽ। १२
।ऽऽ।। १४
ऽ।ऽ।। १५
ऽऽ।।। १७

४	१०	६	१
० १	३ ८	२१	०
२	५	१३	१
४	६	१६	२
९	७	१८	३
	१०	१९	५
	११	२०	८
	१२		१३
	१४		२१
	१५		
	१७		

निजोलिखोचहोइकठौर। सिखिपताकप्रस्तारविधिजानाऔरोऔर १८ ॥कुण्डलिया॥ सबलघुसबगुरुलिखिठयोप्रथमभेदइहिभांति। पहिलेगुरुतरलघुकरहिपुनिकरिसरिसैपांति॥ पुनिकरिसरिसैपांतिउलटिलघुतरगुरुलिखिकैतजिआयोगुरुआदिदासइहिरीतिहिसिखिकै॥ इकइकगुरुइहिभांतिआदिदिशिल्यावहितबलहु। जबलगिसबगुरुआदिपरैआगेकरिसबलहु १९ सप्तकलमेंद्वैगुरुयुक्तकोप्रस्तारजाकीसंख्यापताकाकेदशकोठेमेंहै॥ दोहा॥

पताकाहिकोदेखिकैयामेंदीजैअंक। उद्दिष्टोप्रस्तारमकाजैसहीनिशंक२०॥इतिपताकाप्रस्तार॥ अथमर्कटीलक्षण ॥गीतिका॥ यहपंक्तिकोठनिखैंचिकैप्रतिपंक्तिकोचितुदीजिये। तहँवृत्तिभेदरुमात्रवर्णसोलघुगुरूलिखिलीजिये॥ तिनआदिकोठनिएकएकनिठानिगुरुढिगसूनहै। पुनिवृत्तिकोठदुआदिगनतीभरीघटियनऊनहै २१ लखिभेदपंक्तिविचारिभरियेपूर्वजुअलैअंकही। करिवृत्तिभेदहिगुननपुरवहुमात्रपंक्तिनिशंकही॥ लघुपंक्तिएकजुअंकसोगुरुपंक्तिमेंलिखिलहुजू। तेहिमात्रपंक्तिघटाइबाकीबर्णमेंधरिदेहुजू॥ सोइबर्णपंक्तिहुमेंघटैलघुपंक्तिमेंलिखिआनिये। तेहिआनिकैगुरुपंक्तिमेंघटनावहैफिरिठानिये॥ प्रस्तार

वृत्ति	१	२	३	४	५	६
भेद	१	२	३	५	८	१३
मात्रा	१	४	६	२०	४०	७८
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८
लघु	१	२	५	१०	२०	३८
गुरु	०	१	२	५	१०	२०

प्रति जो भेदमात्रा लघुगुरूकी ठीकहै। तेहिवृत्तिकोठनि संगमर्कटजाल कहत अलीकहै२२॥ मर्कटीजाल॥ दोहा॥ किते भेदलघुअंत है किते भेदगुरुअन्त। इहिपूछेप्रस्तारमें सूचीबरणैसन्त २३ जितेअंकपरअन्त है तापाछेलघुअन्त। तापाछेकोअन्तलहि गुरुअन्तहिकहितन्त २४॥ इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवेमात्राप्रस्तारे नष्टउद्दिष्टमेरुमर्कटीपताकासूचीवर्णनंनामतृतीयस्तरंगः ३॥

दोहा ॥ जितनेमात्रा भेदमें प्रस्तारहिपरकार। तिन नोंवर्णहुमेंकियो अहिनायकबिस्तार १ ॥ अथवर्णप्रस्तारको अनुक्रमणी ॥ विजया ॥ आदिकोभेदसबैगुरुकैपुनिभेदबढ़ैबे किरीतिरचै। आदिगुरूकेतरेलिखिकैलघु आगेयथाप्र तिपंक्तिखचै ॥ पाछेगुरूहिसोपूरणवर्णकसर्वलघूलगियों हींनचै ॥ ऐसेपथारुकैदाइसोदूनोईदूनोकेवर्णकीसंख्या सचै २ ॥ अथवर्णसंख्यायथा ॥ २ ४ ८ १६ ३२ / S S S S S ॥ इतिपंचवर्णसंख्या ॥ अथनष्ट लक्षण ॥ दोहा ॥ पूछेअंकहिअर्धकरिसमआयेलघुजानि। विषमेंइकदैअर्धकरिगुरुलिखिपूरणठानि ३ पन्द्रहांभेद पूछ्यो सोपन्द्रहआधोनहींकैसक्का एकमिलाइसोरहको आधोकियाएकगुरुलिख्यो बाकीरहेआठ ताकोआधो चारिपूरेपर्यो लघुलिख्यो दोइकोआधोएकपूरेपर्योल घुलिख्योएकमेंएकामिलाइ आधोकियोगुरुलिख्यो ॥ S ।।।S॥सबमिलाइ ॥ अथवर्णउद्दिष्टलक्षण दोहा॥लिखिपूछेपरएकवे दूनदूनलिखिलेहि। लघुशिरअंकनिजोरिकैएकमिलैक हिदेहि ४ ॥ ४८१६ / S।।S ॥ अथवर्णमेरुलक्षण ॥ कुण्डलियां ॥ शिरपर कोठादोइतल तीनितासुतलचारि। अक्षरमेरुबढ़ाइयों जलप्रस्तारनिहारि ॥ जलप्रस्तारनिहारिपांतिकीआदि हुअन्तहु। एकएकलिखिजाहुकह्योपन्नगभगवन्तहु ॥ गनिदैहैगुरुयुक्तसकलजियकरहुनखरको। सूनेकोठनि भरहुजोरिद्वैद्वैशिरपरको ५ ॥ अथवर्णपताकालक्षण ॥ दोहा ॥ कोष्ठपताकाकोकरहिखण्डमेरुकीसाखि। ताकेशिरधर एकले दूनोदूनोराखि ६ ॥ दण्डक ॥ दूनोअंकराखिखरी पांतिनालिखनलागेएकद्वैलैतीनितीनिद्वैलैपांचरेखिये। याहीक्रम उपजित अंकनिसोंआगे आगेजोरि जोरिखरी

		१	१	१			
		१	२	१	२		
		१	३	३	१	३	
	१	४	६	४	१	४	
१	५	१०	१०	५	१	५	
१	६	१५	२०	१५	६	१	६

पांति लिखि नविशेखिये॥ एकपांतिभरि दूजीपांतिवहै रीतिकरि आयेअंकछोड़ि ताकेआगे ढूँढ़िलेखिये। क्रमटूटेएकैभलोचलतहिआगेढूँढ़ि दासऐसे बरणपताकापूरेपेखिये ७ ॥ दोहा ॥ बरणमत्तकोएकही हैपताकप्रस्तार। वाहीरूपनिपरधरोयाकोनामउदार ८

अथवर्णमर्कटीलक्षण ॥ दण्डक ॥ षट्पांतिलिखिपहलीयेगनती येभरो दूजीपांतिद्वैतेदूनोदूनो अंकधरिदेहु । दुहुन सों

पंचवर्णपताका ॥

१	५	१०	१०	५	१	।।।ऽऽ	८
						।।ऽ।ऽ	१२
१	२	४	८	१६	३२	।ऽ।।ऽ	१४
	३	६	१२	२४		ऽ।।।ऽ	१५
	५	७	१४	२८		।।ऽऽ।	२०
	९	१०	१५	३०		।ऽ।ऽ।	२२
	१७	११	२०	३१		ऽ।।ऽ।	२३
		१३	२२			।ऽऽ।।	२६
		१८	२३			ऽ।ऽ।।	२७
		१९	२६			ऽऽ।।।	२९
		२१	२७				
		२५	२९				

पंचकलमें द्वैगुरुयुक्तको प्रस्तार॥

गुनिगुनिचौथीपांतिभरिताको आधो आधो पांचीछठी पांतिनको भरि देहु॥ चौथीपांचीपांतिनके अङ्कनकोजोरिजोरि तीजी पांतिरीतीहोय पूरण वहै करि देहु।

वृत्ति	१	२	३	४	५	६
भेद	१	२	३	५	८	१३
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८
लघु	१	२	५	१०	२०	३८
गुरु	०	१	२	५	१०	२०

वृत्तिभेदमात्रवरणलघुगुरुपूछैदास ताकेआगेवरणमरकटीयेधरिदेहु९॥ दोहा ॥ जिते भेदपरअन्तहैं ताआधो गुरुअन्त । तितनोईलघुअन्तहैअक्षरसूचीसन्त १० नष्टउदिष्टपताकहै मत्ताहूकीभांति । समुभिलीजिये सुमतिसजि अक्षरसंख्यापांति ११ ॥ इतिश्रीदासकृते छन्दोर्णवे नष्टउद्दिष्टमेरुमर्कटीपताकासूचीवर्णनंनामचतुर्थस्तरंगः ४ ॥

दोहा ॥ चारिचरण चहुँकेवरणमत्तहोहिंयकरूप । वृत्त छन्दतेहिलगिरच्यो प्रस्तारनिअहिभूप १ यदपिवर्ण प्रस्तारमेंसकलवृत्तिकोबोध। तदपिमत्तप्रस्तारहूसकल मिलैअविरोध २ ॥ छप्पै ॥ मत्तछन्दकीरीतिदासबहुभांतिप्रकासै । आदिअन्तकलदुकलबढ़ैदूजोनहिंभासै ॥ चाय्योतुकसमकलनिपरहियहनेमनिवाहिय । कहुँगुरुथलहैलघूदियहुनहिंभ्रमगतिचाहिय ॥ बिनगनेहोत पूरणकलाजातिगतिकविबाणीहवस । यहजानिनागनायकरच्योजिहाजानैछन्दरस ३ ॥दोहा ॥ दुकलतिकल

चौकलयकल छकलनिरखिप्रस्तार। क्रमतेबरणतदास तहँ वृत्तिछन्दविस्तार ४ मत्तछन्दमेंहातिहू दरशावनइहिहेत। बहुछन्दनकीगतिमिले एकसुकविगनिलेत ५ नेमगह्योयहदासकरि हरिहरगुरुहिप्रणाम। उदाहरणकेअन्तमें परैछन्दकोनाम ६ द्वैकलकेद्वैभेदमें जानोश्रीमधुछन्द। महीसारअरुकमलये तीनित्रिकलकेछन्द ७॥ श्रीछन्द ॥ जैहैश्रीकी ॥ मधुछन्द ॥ तियजियबंधुमधु ८॥ महीछन्द ॥ रमासमानहींमहीं ॥ सारछन्द ॥ ऐनिनैनिचारुसारु ॥ कमलछन्द ॥ चरणबरणअमलकमल ९॥ अथचारिमात्राकेछन्द ॥ दोहा ॥ चारिमत्तप्रस्तारमें पांचवृत्तिनिरधारि। कामारमनिनरिन्दअरु मन्दरहरिहिविचारि १० कामाछन्द ॥ रामैनामैयामैकामै ११ ॥ रमणीछन्द ॥ धरणीबरणीरमणीरमनो १२ ॥ नरिन्दछन्द ॥ सम्हारुसवारुपरिन्दुनरिन्द १३ ॥ मन्दरछन्द ॥ ध्यावतल्यावतचन्दरमन्दर १४ ॥ हरिछन्द ॥ जगमहिंसुखनहिंभ्रमतजिहरिभजि १५ ॥ पंचमात्राप्रस्तारकेछन्द ॥ सोरठा ॥ पञ्चमत्तप्रस्तार आठभेदयुतहरिप्रिया। तरणजारुपंचारवीरबुद्धिनिशियमकशशि १६ ॥शशिछन्द॥महींमेंसहींमेंयशीलेशशीसे १७ प्रियाछन्द ॥ हैखरीपत्थरीतोहिंप्यारीप्रिया १८ ॥तरणिजाछन्द ॥ उरधरोपुरुषसोवरणिजातरणिजा १९ ॥ पंचालछन्द ॥ नाचतगावतदैतालपञ्चाल २० ॥ वीरछन्द ॥ हरुपीरअरुभीरवरधीररघुवीर २१ ॥ बुद्धिछन्द ॥ भ्रमैतजिहरैभजिकरैसुद्धिधरैबुद्धि २२ ॥ निशिछन्द ॥ सुख्यलहिदुख्यदहिभानिरिसियाहिनिशि २३ ॥ यमकछन्द ॥ श्रुतिकहहिहरिजनहिछुवतनाहिंयमकवाहिं २४ ॥ छमात्राकेछन्द ॥ दोहा ॥

तालीरमानगन्निका जानिकलाकरताहि। मुद्राधारी वाक्यअरु कृष्णनायकोचाहि २५ हरअरुविष्णुमदन गनो अधिकोहोननमित्त। षटकलतेरहभेदके प्रकट तेरहोवृत्त २६ ॥ तालीछन्द ॥ नचैहैशम्भूपैबेतालीदैताली २७ ॥ रमाछन्द ॥ जगमाहींसुखनाहींनजिकामैभजिशमै २८ ॥ नगन्निकाछन्द ॥ प्रसिद्धहोंअघन्निकानसिद्धहोंनग न्निका २९ ॥ कलाछन्द ॥ धीरगहोआजुलहोनन्दलल। ॰ामकला ३० ॥ करताछन्द ॥ महिधरताजगभरतादुख हरतासुखकरता ३१ ॥ मुद्राछन्द ॥ भजैरामसरैकामन छापाहिनमुद्राहि ३२ ॥ धारीछन्द ॥ दानवारिचित्तधारि पापभारिकोशधारि ३३ ॥ वाक्यछन्द ॥ जगतनाथगहत हाथशरणताक्यकहतवाक्य ३४ ॥ कृष्णछन्द ॥ छांडैहठ एरेशठतृष्णैनजिकृष्णैभजि ३५ ॥ नायकछन्द ॥ सुखका रनदुखटारनसबलायकरघुनायक ३६ ॥ हरछन्द ॥ जगँ जननिदुखीजननिकृपाकरहिव्यथाहराहि ३७॥ विष्णुछन्द ॥ दासजगतभूठलगतयाहितजहिविष्णुभजहि ३८ ॥ मदनकछन्द ॥ तरुणिचरणअरुणबरणहृदयहरणमदनक रण ३९ ॥ सातमात्राप्रस्तारकेछन्द ॥ दोहा ॥ सातमत्तप्रस्तारको शुभगतिजानोछन्द। वृतियकीसप्रस्तारहै चारिभांति गतिनन्द ४० ॥ शुभगतिछन्द ॥ कृपासिन्धोदीनबन्धोसर्व सुरपतिदेहिशुभगति ४१ ॥ पुनःप्रभाविशाल ॥ लालगोपाल यशुमतिनन्दआनँदकन्द ४२ ॥ पुनः ॥ खलैघायकसर्व लायककंसमारणजनउधारण ४३ ॥ पुनः ॥ दुखकोहरो सुखविस्तरोबाधाकदनकरुणासदन ४४॥ आठमात्राकेछन्द। दोहा ॥ आठमत्तप्रस्तारकेतिनादिकउनमानि। सहित

हंसमधुभारगतिचौतिसवृत्तिबखानि ४५ ॥ लक्षणप्रतिदल ॥ कर्नोकर्नो।तिनोंबनों॥ भागनुकरना। हंसबरंना ॥ नयहि प्रशंसा।कहिचोवंसा॥द्विजबरभासन।कहतसवासन ॥ नगनतगवती।कहियमधुमती ४६॥ तिर्नाछन्द॥धर्मज्ञाता॥ निर्भयदाता॥तृष्णाहिन्नो।जीवैतिन्नो ४७ ॥हंसछन्द ॥ पोखर जोऊ।दीहकितोऊ॥जातनकेहू।हंसलटेहू ४८॥चौवंसाछन्द॥ उपजेपुत्ता। सुलगनजुत्ता॥ जगअवतंसा।चरचउबंसा॥ ४९ ॥ सवासनछन्द॥ सुनहुबलाहक।हुजियतनाहक॥ बरषि हुतासन।अपयशवासन ५० ॥ मधुमतीछन्द॥ तपनिकस तहो।धरिकबशिरहो॥ विमलबनलती।सुरभिमधुमती॥ ५१ ॥ लक्षण ॥ दोहा ॥बिप्रजगनकरहंतहैवाहीगतिमधुभार। छविविपंचजतिजानिये आठमत्तप्रस्तार ५२ ॥ करहंतछन्द॥ यशुमतिकिशोर। शशिजिमिचकोर ॥ मममुख लखन्त। यकटकरहन्त ॥ मधुभारछन्द ॥ दक्षिणसमीर। अतिकृशशरीर॥ हुअमन्दभाइ। मधुभारपाइ५३ ॥छविछन्द॥ मिलिहिकिमिमोर । तकतशशिओर ॥ थकित सोविशेखि। बदनछविदेखि ५४ ॥ अथनौमात्राकेछन्द॥दोहा॥ नौमत्ताकीअमितगतिपचपनवित्तविचारि । कर्णपगन हारीगनोतसबसुमतीनिहारि ५५ ॥ हारी छन्द ॥ तोमानुभारी। ठानेपियारी ॥ सोतैसुखारी। होनीमहारी ५६ बसुमती छन्द ॥ सोशुभ्रशशिनो । जोदानअसिसो ॥ साजैबसुमती । सारिबसुमती ५७ ॥ अथ दशमात्रा के छन्द ॥ दोहा ॥ दशमत्ताकेछन्दमें वृत्तनवासीहोय । संमोहादिकगतिनसँग बरणतहैंसबकोय ५८ ॥ सोरठा ॥ संमोहा गुरुपांच कहिकुमारललितानसँग। तयगनमध्याबांच

तुंगाद्विजसँगभासगहु ५९ ॥ समोहाछन्द ॥ ह्योचाहोसन्ता । जोमेरोकन्ता ॥ तोभंजोकोहा । लोभासंमोहा६० कुमारललिताछन्द ॥ जुराधहिमिलावै । वहैमोहिंजियावै ॥ कहतभरिउसासों । कुमारललितासों ६१ ॥ मध्याछन्द ॥ तौलौंबिधिजामै । लज्जाअरुकामै ॥ बांटोयहसोई । मध्याकुचदोई ६२ ॥ तुंगछन्द ॥ अम्बरछबिछाजै । मुक्तअवलिराजै ॥ मेरुशिखरनीके । तुंगउरजतीके ६३ ॥ तुंगाछन्द ॥ तुवमुखशशिऐसो । निरखतजेहिशेसो ॥ छकिरहुद्वैगुंगा । सुनहिउरजतुंगा६४ ॥ दोहा ॥ द्विजबरजगकमलहिरचो द्वैद्विजगोकमलाहि ॥ त्योंरतिपदसंगनातहै दीपकलातेचाहि ६५ ॥ कमलयथा ॥ पियचषचकोर है । तियनयनभोरहै ॥ बिधुबदनबालको । कमलमुखलालको ६६ ॥ कमलाछन्द ॥ कबअँखियनलखिहों । अरुभुजभरिरखिहों ॥ शशिधरबिमलकला । हृदयकमलकमला ६७ ॥ रतिपदयथा ॥ युवतिवहबरतितो । उरतेयहटरतिजो ॥ हरनिहियदरदकी । सुरतिपदपदुमकी ६८ ॥ दीपकछन्द ॥ जयजयतिजगबन्द । मुनिकौमुदीचन्द ॥ त्रैलोक्यअवनीप । दशरत्थकुलदीप ६९ ॥ ग्यारहकलाकेछन्द ॥ दोहा ॥ ग्यारहकलमेंएकसै चौवालिसगनिवृत्त ॥ तहँअहीरलीलाअपर हंसमालगनिमित्त ७० सोरठा ॥ जातअहीरकहंत रातप्रकटिलीलाभनो ॥ सगयोग्यारहमंत छन्दहंसमालागनो ७१ ॥ अहीरछन्द ॥ कौतुकसुनहुनबीर । न्हानधँसीतियनीर ॥ चीरधरयोलखितीर । लैभजिगयोअहीर ७२ ॥ लीलाछन्द ॥ धन्ययशोदाकही । नन्दबड़ेभागही ॥ ईश्वरहैजाघरै । अद्भुत

लीलाकरै ७३ ॥ हंसमालाछन्द ॥ इहिअरण्यमाहीं । सर मानुष्यनाहीं ॥ विकसैकंजआला । कुरैहंसमाला ७४ बारहमात्राकेछन्द ॥ दोहा ॥ बारहमत्ताछन्दगति बरणयोअमितफणीश ॥ होतकियेप्रस्तारहै वृत्तदुसैतैंतीस ७५ लक्षणप्रतिदृढ ॥ तीनोंकर्नांशेषा । मोसोंगोमदलेषा ॥ चित्रपदाभभकर्नों । ननमहियुक्ताबर्नों ७६ रोनसोंहिहरमुखज्यों । अमृतगतिद्विजभसत्यों ॥ नयसहिसारंगियहो । दशलहुगुरुदमनकहो ७७ ॥ शेषाछन्द ॥ ताकोजीमेंध्याऊँ । ताहीकोहोंगाऊँ ॥ पीरोजाकेकेशा । कंठेजाकेशेशा ७८ ॥ मदलेखाछन्द ॥ मिथ्यावादनकोहा । निर्लज्जाअरुमोहा ॥ जेतोऔगुणदेखो । तेतोमैंमदलेखो ७९ ॥ चित्रपदाछन्द ॥ रामकह्योनिजधोखे । स्वर्गलह्योतिनचोखे ॥ भक्तनकोनविचारो । चित्रपदारथचारो ८० ॥ युक्ताछन्द॥ दृगयुगमनकोमोहै । तिनसँगपुतरीसोहै ॥ लखियहउपमायुक्ता । कमलभ्रमरसंयुक्ता ८१ ॥ हरमुखछन्द ॥ धन्यजन्मनिजकहती । प्राणवारतहिरहती ॥ देखिग्वारिलहिसुखको । मैंनगवैंहरमुखको ८२ ॥ अमृतगतिछंद ॥ फिरिफिरिखावतछतिया । लखतरहैदिनरतिया ॥ तुमजुलिखीवहिपतिया । अमृतगतीमृदुबतिया ८३ ॥ सारंगियछन्द ॥ धनिधनिताहीतियको । बशकरतीजोपियको ॥ सुरनिरमावैंहियको । करगहिसारंगियको ८४ ॥ दमनकछन्द॥ त्रिषधरधरपरमप्रिया । जगतजननिसदैंहिया । जयजयजनदरदहरी । प्रबलदनुजदमनकरी ८५ ॥ दोहा ॥ गोसभगोनरक्रीड़है बिम्बनसोंयोंपूर ॥ सजसीतोमरजानियो त्योंतमोल है सूर ८६ ॥ मानवकीड़ायथा ॥ धन्य

यशोदाहिकही। नन्दबड़ोभागसही॥ ईश्वरकैजाहिघरै। मानवकोक्रीड़करै ८७॥ विम्बछन्द॥ अमियमेंआशातेरो। हरतवहचेतुमेरो॥ मनहिंयहक्योंनमोहै। अधरतुवबिम्बसोहै ८८॥ तोमरछन्द॥ असतीनकोशिखमानि। तियक्योंतजैकुलकानि॥ द्विजयामिनीअपवाद। कहुँछोड़तोमर्य्याद ८९॥ सूरछन्द॥ बांधैनबालानयन। श्रीपाइजेमोहैन॥ रागीनहींहैंमूर। तेतोबड़ेहैंसूर ९०॥ दोहा॥ लीलारबिकलजातयुत सजकरनोदिगईश॥ तरलनयनरबिलघुकला प्रस्तार्योफणईश ९१॥ लीलाछन्द॥ अवधपुरीभागभारु। दशरथगृहछबिअगारु॥ राजतजहँविश्वरूप। लीलातनुधरिअनूप ९२॥ दिगीशछन्द॥ ब्रजमेंगोपालमांगों। पदपद्मप्रेमपागों॥ हरध्यायजोअनन्दै। दिगईशजाहिबन्दै ९३॥ तरलनयनछन्द॥ कमलबदनिकनकबरनि। दुरदगमनिहृदयहरनि॥ बड़ेहिसुकृतिमधुरबयनि। मिलततरुणितरलनयनि ९४॥ तेरहकलकेछन्द॥ दोहा॥ नराचिकादिकतेरहै कलकीगतिगनिलेहु॥ वृत्तिबूझिकैतीनिसै सतहत्तरकहिदेहु ९५ करनाजोरनराचिका जोगोयमनमहर्ष॥ रगनरगनअरुनन्दतेहै लक्ष्मीउत्कर्ष ९६॥ नराचिकाछन्द॥ भौंहैंकरीकमानहैं। नैनाप्रचण्डबानहैं॥ रेखाशिरेजोतैंदई। नराचिकायहौभई ९७॥ महर्षछन्द॥ तमोरगुनीजतभाई। जवाहिरकीगतिपाई॥ जितोपरभूमिहिजाई। तितोइमहर्षबिकाई ९८॥ लक्ष्मीछन्द॥ वेदपावैनजाअन्त। जाहिध्यावैंसबैसन्त॥ ज्याइबोजक्तजातन्त। पाहिसोलक्ष्मीकन्त९९॥ चौदहमात्राकेछन्द॥ चौदहमत्ताछन्दगतिशिष्यादिकअवरे

खि। भेदछसैदशहोतहैंप्रस्तारोकरिदेखि १०० ॥ अथ गणातिपदछन्द॥ सातोगो शिष्याकीजै। त्रियदुजमगनसुवृत्ती है॥ पाइतामोभहिसगनो। हैमनिबँधोभौमसको १०१ तीनिभग्गनगसारवती। सुमुखिदुजोभमहारवती॥ नरजगेमनोरमाकही। दुजसजगसमुद्रिकावही १०२॥ शिष्याछन्द॥ मीचौबांधीजाकेही। नाहींत्राच्योताकोजी॥ एरेभाईमेटैको।लिख्यासिख्याबन्ध्येजो १०३॥ सुवृत्तीछन्द॥ असितकुटिलअलकैंतेरी। उचितहरतुहैमतिमेरी॥ यहकतसुमुहनैजीको।बरजहिउरजसुवृत्तीको १०४ पाइत्ताछन्द॥ नयनालागेबिधुबदनी। वैरीजुट्ठेप्रबलअनी॥ मांगोपासोअरियअड़े। पाइत्ताहैकरमबड़े १०५॥ मनिबंधोछन्द॥ आपुहिराख्योजोनचहै। कर्मलिख्योतौपाइरहै॥ कर्महिलागैहाथसोऊ। जोमनिबांध्योगांठिकोऊ १०६॥सारवतीछन्द॥ आवतीबालशृंगारवती। पीनपयोधरभारवती॥ कुञ्जरमोतियहारवती। पुञ्जप्रभादधिसारवती १०७॥ सुमुखीछन्द॥ यहनघटाचहुँओरबनी। दशदिशिदौरतिहारअनी॥ तजियहिअवसररूपसखी। चलिहरिपैरजनीसुमुखी १०८॥ मनोरमाछन्द॥ जबहिंबालपालकीचढ़ी। तबहिं अद्भुतैप्रभावढ़ी॥ लखीदासपूर्णोपमा। कमलमेंबसीमनोरमा १०९॥ समुद्रिकाछन्द॥ हरीमनुहारिगोकह्योयही। नहिंनहिंनजूनहींनहीं॥ सुनिसुनिबातियांमनोपिका। लखिलखिअँगुरीसमुद्रिका ११०॥ लक्षण॥ दोहा॥ चारिदशैकलहाकली लमलमशुद्धगतंत॥ सगनभुजाहैसंयुता दुरंत्रिसरूपीमंत १११॥ हाकलिकाछन्द॥ परतियगुरुतियतूलगनै। परधनगरलसमानभनै॥ हिय

नितरघुबरनामररै। तासुकहाकलिकाल करै ११२॥ शुद्धगाछन्द॥ अरीकान्हाकहांजेहै। सुतेरोदासकैरैहै॥ सितारालैबजावैनू। केदाराशुद्धगावैतू ११३॥ संयुताछन्द॥ नहिंलालकीम्टदुहांसहै। मनमत्थकीयहपाशहै॥ भ्रुवनैनसंगनलेखिये। धनुतीरसंयुतपेखिये ११४॥ स्वरूपीछन्द॥ श्रीमनमोहनकीमूरति। हैतुवसनेहकीसूरति॥ मैंनिजमनयहअनुरूपी। तूमोहनप्रेमस्वरूपी ११५॥ पन्द्रहमात्राकेछन्द॥ दोहा॥ पन्द्रहमत्ताछन्दगतिआदिचौपईजानि।नौसैसत्तासीकहतवृत्तिभेदउनमानि ११६॥ लक्षण॥ पन्द्रहकलागनौचौपई। हंसीतिन्नादुजघुजठई॥ तरहरिखानउपरलोंकला। सकलकहतअहिपतिउज्ज्वला ११७॥ चौपाई॥ तुवप्रसाददेख्योभरिनैन। कहीसुनीमनभावतिबैन॥ कबपरिहैमोहनगलबांह। चौपईठिइतनीमनमांह ११८॥ हंसीछन्द॥ आईवक्षोपरिचिकनई। छूटैलागीतनुलरिकई। लागीहांसीमनम्टदुहरै। बालाहंसीगतिपगुधरै ११९॥ उज्ज्वलाछन्द॥ धवलजरतपरबत्तहोतबै। अरुपयनिधिकोबरणैसबै॥ तबहिंबिमलहीशशिकीकला। जबनहुत्योतोजसउज्ज्वला१२०॥ दोहा॥ तीनितगनध्वकहैध्वजा हरिणीछन्दसुभाउ। तीनिरगनअहिपतिकहै महालक्ष्मीठाउ१२१॥ हरिणीछन्द॥ बसैउरअन्तरमेंनितही। मिलैकबहूँभरिअंकनही। लखौंसबठौरनवैनकहै। यहैहरिणीरसरीतिगहै १२२॥ महालक्ष्मीछन्द॥ शास्त्रज्ञाताबड़ोसोभनो। बुद्धिवन्तोबड़ोसोगनो। सोइशूरोसोइसन्तहै। जोमहालक्ष्मीवन्तहै १२३॥ सोरहमात्राकेछन्द॥ दोहा॥ सोरहमात्राछन्दगति

रूपचौपई लेखि। पन्द्रहसैसत्तानवे जानोभेद विशेखि १२४॥ रूपचौपई छन्द ॥ तुवप्रसाद देखोभरिनैनो। कहौ सुनीमनभावनिबैनो। कबपरिहैमोहन गलबाहीं। चौप इठि इतनीमनमाहीं १२५ ॥ लक्षण ॥ चार्यो करना वि द्युन्माला। मोतीपोहै चम्पकबाला॥ कर्नासदुहै सुखमा लसिता। तिन्नाननगो भ्रमरविलसिता ॥ तिन्नानोयोस मुकियमत्ता। कुसुमविचित्रानयनयजत्ता॥गोसभसोगो हरिअनुकूले। दुजभमतामरसोगगतूले॥ निजभैपनेमा लिनिनिजुमण्डी। नरसासगहिजियजानियचण्डी॥च क्रभदुजदुजसगनहिंथुलिका। ननगननगहैप्रहरनकलि का ॥ जलोद्धतगती जस जस पगनो। मनिगुनदुजपि यदुजपियसगनो ॥ ऐन भागगहिस्वागतकोछै। चन्दव त्सरनभासप्रकटह्वै। निजजरिपावतमालतीसदा। नभ जरीहिपठवैप्रियंवदा। रेणुरेलगहिहैरथद्धनो। नभसया हिद्रुतपाउशुद्धतो। पकअवलिभनिजोजलहीसुनि। बट दशलघुहिअचलधृतिमनगुनि १२६ ॥ विद्युन्मालाछन्द ॥ दूजेकोप्योवासोभारी। नीरेनाहींशृंगीधारी॥ एरीक्यों जीवैगीबाला। चौहांनवैविद्युन्माला १२७॥ चम्पकमाला छन्द ॥ देख्योवाको आननचन्दा। लूट्योप्यारे आनँद कन्दा। आईजीकीमोहनबाला। कीजैहीकी चम्पकमा ला १२८ ॥ सुखमायथा ॥ होतोशशिसोमान्योमनमें। जा न्योहरिहैं तापैक्षनमें ॥ बीती सजनीबातें सुखकी। देखे सुखमाप्यारेमुखकी १२९ ॥ भ्रमरविलसिताछन्द ॥ धीरे धीरे डगमगधरती। रातीरातीद्युतिविस्तरती। आवै आवै त्रियमृदुहँसिता। आगेआगे भ्रमरविलसिता १३० ॥

मत्ताछन्द ॥ आयोआलीत्रिषमबसन्ता। कैसेजीवीनित्र्अरनकन्ता ॥ फूलटेसूकरिबनरत्ता। चौहाँगूँजैमधुकरमत्ता १३१ ॥ कुसुमविचित्रा ॥ चलनकह्योपैमोहिंडरभारी। परमसुगन्धावहमुकुमारी ॥ अलितहँह्वैहैअधिकबिहारी। कुसुमविचित्रावहफुलवारी १३२ ॥ अनुकूलछन्द ॥ गोपिहु ढूँढाब्रतकतदूजा। कूबरहीकीकरहुनपूजा ॥ योगसिखावैमधुकरभूलो। कूबरहीसोंहरिअनुकूलो १३३ ॥ तोमरछन्द ॥ तुवहगसोंजननीहगतेरो। नहिंसमताहिलहैमनुमेरो। जलचरखञ्जपराजयसाजै। सखिनवतोमरसोंलखिलाजै १३४ ॥ नयमालिनीछन्द ॥ पहिरतपादजासुशितलाई। सखितनुहोतिकम्पअधिकाई ॥ तियप्रिय स्वांगचीन्हिवहराई। यहनयमालिनिसुमनलेआई १३५ ॥ चंडीयथा ॥ जयजगजननिहिमालयकन्या। जैतिजैतिजयत्रिभुवनधन्या ॥ कलुषकुमतिमदमत्सरखण्डी। जयतिजयतिजनतारनचण्डी १३६ ॥ चक्रयथा ॥ देवचतुर्भुजचरणन्हपरिये। याहि बनक ममहिय थिति करिये ॥ शंखरुगदवियकरनिशिभरिकै। चक्रकमलत्रियकरबिचधरिकै १३७ ॥ प्रहरनकलिकाछन्द ॥ दशरथसुतकोसुमिरनकरिये। बहुतपजपमेंभटकिनमरिये ॥ बिरद बिदितहैजिनचरणनको। प्रहरनकलिकाटनदुखगनको १३८ ॥ जलोद्धतिगति ॥ घनोभगरुराक्षसैकरतुहै। नरामढिगतेसहीपरतुहै ॥ अगारगनवेदरेतरनितें। जलोद्धति गतीउठैधरनितें १३९ ॥ मनिगुन ॥ अभिनवजलधरसमतनलसितं। अरुणकमलदलनैनहुलसितं ॥ जयतिशरदशशिसमबरबदनं। दिनमणिकुलदिनमणिगुणसदनं १४०

स्वागता ॥ याहिभांतितुमहूँजुखिझावै । बालबातत्तवक्यों बनिआवै । नन्दलालमटक्योकवऐसे । स्वागतासुकरती तुमजैसे १४१ ॥ चंद्रवर्त्मछन्द ॥ ऊमिश्वासलियमैंदुखभ रिकै । घेरिलीन्हतहँभौंरनिअरिकै । औरव्योंतबलिहोत नतबहीं । चन्द्रवर्त्मैबिचऊग्योजबहीं १४२ ॥ मालती यथा ॥ सुमनलखेलतिकाअनन्तमें । सरघनकोसुखहै बसन्तमें ॥ मनमहँमोदनभौंरकेरती । खिलतिनजौलगि मालतीलती १४३ ॥ प्रियंवदा ॥ नयनरेणुकनजाहिकेपरैं । मरतपीरनहिंधीरसोधरैं ॥ रहतिमोदगनमेंअरीसदा । तियसरोजनयनीप्रियंवदा ॥ रथोद्धता ॥ हैप्रभुत्वजगमध्यजो महा । भुक्तयुक्तसुखसाततौकहा ॥ रामपाइमननाहिंशुद्ध तो । तुच्छजानिपुरुषार्थउद्धतो १४४ ॥ द्रुतयाछंद ॥ जिनहिं संगलिगरीनिशिजागे । नयनरंगजनुजावकपागे ॥ गह रुहोतरिसतामुसँभारो । उतहि लाल द्रुतपाउँनधारो १४५ ॥ पंकअवलि ॥ मोहनविरहसतावतबालहि ॥ बाइ बकतिनहिंजानतिहालहि ॥ बासरनिशिअँसुआवरषात्र ति । पंकअवलिजहँईतहँठावति १४६ ॥ अचलधृतछन्द ॥ कुलिशसरिसवरदशननिदरशित । परुषबचनमुखकढ़ तिकहतहित ॥ सबतोहिंकहतमृदुलतनुअनुचित । ति यतुवयुगलअचलधृति उरानित १४७ ॥ पद्धरीलक्षण ॥ दोहा ॥ सोरहसोरहचहुँचरण पगनएकदैअन्त ॥ छन्दहो तयोंपद्धरी कह्योनागभगवन्त १४८ ॥ यथापद्धरीछन्द ॥ नभरै निशिघनतमभयविशाल । पदअटकतकंटककर्दभ जाल ॥ मनसुमिरतभयभञ्जनगोपाल ॥ पद्धरियप्रेममग दमत्तबाल १४९ ॥ अथ सत्रहमात्राप्रस्तारकेछन्द ॥ दोहा ॥ सत्रह

मत्ताछन्दमें धारीत्रिजयोनीक ॥ बालातिरगपचीस सैचौरासीदैठीक १५० ॥ धारीयथा ॥ मयूरपखाशिरमें थिरकाये। सुपीतपटाउरमैंउरमाये ॥ चलैमुखचन्द्रवि लोकिकुमारी। गयेतुलसीबनमेंगिरिधारी १५१ ॥ बाला यथा ॥ मोरकेपक्षकोमुकुटआला। कंठमेंसोहती मुक्तमा ला ॥ श्यामघनरूपतनुदृगबिशाला । देखिरीदेखिगो पालबाला १५२ ॥ अथअठारहमात्राकेछंद ॥ प्रकटअठारह मत्तकोरूपामालीहोइ। वृत्तिसुइकतालिससैइकयासीजि यजोइ १५३ नौगुरुरूपामालियाअनियममालीवंस। सुयशसंगप्रतिपायँमें छंदहोतकलहंस १५४ ॥ रूपामाली यथा॥ नेहाकीवेलीबोयोंजीमें। आछोथाल्होकैराख्योंहीमें॥ उत्कंठापानीदैपालीहै। प्यारीजीकोरूपामालीहै १५५॥ मालीछन्द ॥ मुरलीअधरमुकुटशिरदीन्हेहै । कटिपटपीत लकुटकरलीन्हेहै ॥ कोजानेकबआयोसुनिआली । उ रतेकढतनकेहूंबनमाली १५६ ॥ कलहंसछंद ॥ मनवास शोभसरसी किन्हनैये। मुखनयनपाणिपदपंकजछैये॥ कलधौतनूपुरनकीछबिदीसी । कलहंसचेतुअनकीअव लीसी १५७॥ अथउनीसमात्राकेछंद ॥ दोहा ॥ उत्तमउनइसमत्त मेंरतिलेखादिविचारि। शतसठिसैपैंसठिकहतवृत्तभेद निरधारि ॥ सगनइग्यारहलघुकरनरतिरेखातुकचाहि। गनगनगनदैकरनदेजानिइन्दुबदनाहि १५८ ॥ रतिले खाछन्द ॥ सबदेवअरुमुनिन मनतुलनितोल्यो। तबदा सदृढवचनयहप्रकटबोल्यो ॥ इकओरमाहिसकलजप तपविशेखो। इकओरसियपतिचरणबिरतिलेखो १५९॥ इन्दुबदनाछन्द ॥ दोषकररंकसकलंकअतिजोई। घाटिअरु

बाहिपुनिमासप्रतिहोई॥ भागअवलोकिहहिइन्दुनिच आली। इन्दुवदनाकहतसोहिंवनमाली १६०॥ अथबीस मात्राकेछंद॥ दोहा॥ होतहंसगलिआदिदैछन्दनिमत्ता बीस। दशहजरनौसैउपर गनोभेदछ्यालीस॥ बीसै कलबिननियमहंसगतिसोहै। सोभासोसोजलधरमा लाजोहै॥ सोरनबिप्रसाहिगजबिलसिततलुहै। दीदी पहिदीपकियकहतकबिजनुहै १६१॥ हंसगतियथा॥ जि नजंघनकररूपलियोवित्तकारन। बारणकाढेदन्तफिर तदरबारन॥ चरणभयेहूअरुणआजनहिंआयउ। ता सुहंसगतिसीखतकिनबौरायउ १६२॥ गजबिलसितयथा॥ नागरिकामदेवन्तपकटकअनखुहै। सोहैकानभालपर तिलकसुधारहै॥ प्रेमसिपाहअश्वटगचपलजुअतिहै। तंत्रुनिजंत्रुजानिगजबिलसितगतिहै १६३॥ जलधरमाला छंद॥ चौहानछैविपुलकलापीयेरी। पीपीबोलैपपिहा पापीबैरी॥ कैसेराखैविरहिनिबालाजीको। जारैका रीजलधरमालाहीको १६४॥ दीपकीयथा॥ योहोतहै जाहिरेतोहियेश्याम। ज्योंदर्पसीसीसख्योधैनमदधाम॥ तूश्यामहियबीचयोंजाहिरेहोत। ज्योंनीलमणिमेंलसैदी पकीजोत १६५॥ लक्षण॥ त्रिपिनतिलकोललनगनरेरंग ना। गवनपियतरहिगुरुप्रकटधवलहिगना॥ छन्दनिशि पालकियसोनगुनगोनरे। चन्द्रसवलघुचरणरुद्रगुरुजो नरे १६६॥ बिपिनतिलक॥ भुवनप्रतिरामप्रतिकैसकेजंगना॥ अरिनबनवासलियेसंगलेअंगना॥ जहँसुतहँदासदमकै मनोदामिनी। बिपिनतिलकैसकलैचैभईभामिनी १६७॥ धवलयथा॥ सुरसरितजलअमल सुचित्तसुनिवरनिको।

15605

गिरिशाअंगअहिअंगवसन विविधरनिको ॥ संगतगिरितुहिनगिरिशरदशशि नवलहै। सबउपरअधिक सियपतिसुयशधवलहै १६८ ॥ निशिपालयथा ॥ लाजकुलसाजगृहकाजबिसरायकै। पालगत लाल किहि जालइत आइकै ॥ आशुचलिजाहिबलि तासुकिनतासुकै। भालहुअलालनिशिपालगतजासुकै १६९ ॥ चंद्रयथा ॥ कमलपरकेदलिजुग तिनहिंपरगिरियुगल। तिनहिंपर बिनहिंअवलम्ब सरवरजल ॥ निरखिबिबिगिरिबहुरि कम्बुसेचकितमति। उपरजगमगिरह्योचन्द्रइकविमलअति १७० ॥ इकीसमात्राकेछंद ॥ दोहा ॥ पवंगादिइकईसमें कीजैछन्दबिचार। सत्रहसहसरुसातसै इग्यारहप्रस्तार ॥ चारिचकलइकपंचकल जानिपवंगमबंस ॥ तीनिबेरपियरागना छन्दहोतमनहंस १७१ ॥ प्लवंगमयथा ॥ चकको उमलयागिरिखोदिमहावतो। तोकतदक्षिणपौनतियानिशितावतो ॥ व्याकुलबिरहिनिबालकखैभरिनयनको। निदतिबारहिबारपवंगमसैनको १७२ ॥ मनहंसयथा ॥ खरखूधमध्यतुरंगशोभनपावई। नहिंश्रामसमण्डलसिंहहोसँगवावई ॥ खलसंगत्योंजियसंतकेदुखदाउहै। मनहंसकेनहिंकागसंगतिचाउहै १७३ ॥ अथबाइसमात्राकेछन्द ॥ दोहा ॥ मालतीमालादिदै छन्दबाइसमत्त ॥ भेदअठाइससहसपर सैसत्तावनतत्त १७४ ॥ लक्षण ॥ सवैदीहामालतीमालासाधा। सोकनौंदैद्विजवरप्रियमअगाधा ॥ द्विजवरनंदनँदनसरकनैबानीछै। जानहुबंशपत्रभरनोभमलहुगुरुकै ॥ समदाविलासिनीनिजभजेनशंखकरहो। नलरणभागसन्तयतजानहिंकोकिल

को ॥ मोतोयोंसोगोकरिकैमायहिपूरो । वेईत्रनों नृत्यग
तीमत्तमयूरो १७५ ॥ मालतीमालायथा ॥ कित्तीतेरीभूमैंहै
ज्योंकैलासा । कैलासामेंजैसेशम्भूकोबासा ॥ शम्भूजू
मेंगंगाजूकीधारासी । गंगाजूमें मालतीकी मालासी
१७६ ॥ असम्बाधा ॥ रात्योद्योसैवामजपत अतिवैतोपैं ।
लूताहीको नामकहतिमतिलेमोपैं ॥ पापीपीड़ावन्तजग
तजनसुनुराधा । जाके ध्यायेंहोत अकलुष असम्बाधा
१७७ ॥ मानिनीयथा ॥ ललितदुकानढार देखशुभकोन
आवै । सुमुखिसुबोलमूलिकोउनाहिं बिकाइ जावै ॥
दिनदिनहोतिदास अतिरूपखानिनी है । करि बहु भाव
सेतिमनुलेतिमानिनी है १७८ ॥ वंशपत्रयथा ॥ घूंघुरवारि
श्यामअलकैंअतिछबिछलकै । चारुमुखारबिन्दलुब्ध्यो
क्षिभवँरललकै ॥ शुभ्रतुलाकमुकद्युतिकैछबितिहुँपुरकी ।
दासमुवंशपत्रयहकैसोनकमसुरकी १७९ ॥ समदविलासिनी
यथा ॥ कुचखुलिजानिऐंठिअँगिरानिभित्तिधरिकै । लख
तगुपाललालपटओटओटकरिकै ॥ परशतभूमिकेश
उरलाजलेशनकहूँ । समदबिलासिनीबसनतोसँभार
अजहूँ १८० ॥ कोकिलकयथा ॥ अधरपियूषपानतियकोन
करैजबलों । मधुरसिंगारउक्तिकबिकीनलगैतबलों ॥
पियतनुआमऔरमधुकोजबलोंतिलको । तबलगिश
ब्दहोतमधुरीनहिंकोकिलको १८१ ॥ मत्तमयूरयथा ॥ दे
ख्योवाहीअंगप्रभाकोसुनिबाला । जान्योकैहैआवतका
रीघनमाला ॥ आयोचाहैआधघरीमेंबनमाली । नच्चै
कूकैमत्तमयूरोसुनिआली १८२ ॥ मायायथा ॥ काहेको
कीजैमनएतीदुचिताई । काहूमोंवाकीलिपिमेटीनहिंजा

ई ॥ ताहीकोध्यावैमनबाचाअरुकाया । सोईपालैगो जिनदेहीनिरमाया १८३ ॥ तेईसमात्राकेछन्द ॥ दोहा ॥ हीर कद्दढ़पटआदिदैतेइसमत्तअनन्त । ऋयालिससहसरु तीनिसै अड़सठभेदकहन्त ॥ रलतलायकलकमद्दढ़पट गुरुजतनित्त। तीनिटगनयकरगनदै हीरकजानोमित्त १८४ ॥ दढ़पटयथा ॥ पहिरतजामाभ्भीनको चहुँथालगि भूम्यो। बन्दनिबांधतहूँदुहूँहाथनिमेंघूम्यो॥डारिद्योरी पेंचमेंमेरोमनश्राली । दढ़पटुकोकटिकसकतहीमोहन बनमाली १८५ ॥ हीरकछन्द ॥ जाहुनपरदेशललनलालच उरमण्डिकै। रतननिकीखानिसुतियमन्दिरमेंछण्डिकै॥ बिद्रुमऔलालनिसमवोठनिअवरेखिये। हीरकअरुमो तिअसनदन्तनिलखिलेखिये १८६ ॥ चौबीसमात्राकेछन्द ॥ दोहा ॥ लोलादिकअहिपतिकह्यो छन्दमत्तचौबीस। दश पचहत्तरसहसपर जानो त्रित्तपचीस १८७ ॥ लक्षण ॥ पांचोपांचोगोदिजविथवासंतीकोछै। भासम्मत्तनताटकै देखोजातचकितह्वै॥गोकर्नोपियमोकर्नैदैलोदुगलोला। विद्याधारीसबगुरआनियमहवैहैरोला १८८ ॥ वासन्तीछन्द॥ देखेमातेभौंरकरतयेदौरादौरी । श्रावैगेगोपालसदन कोजोराजोरी ॥ बैरीबैठीशोचकरतिहैंजीमेंभूले। लागो चैतोमासबिमलवासन्तीफूले १८९ ॥ चकिताछन्द ॥ पीत बसनकीकायासोतीमोहनिमनकी । सोहति सजनीत्यों पाटीरीखौरनितनकी ॥ तोतनकबकेहेरैआली नेसकत कितैं। निश्चलऋँखियांसोहैमानोंखञ्जनचकितैं १९० ॥ लोलाछन्द ॥ आयेहूतरुणाइ लीन्हेहोलरिकाई । होती क्योंसखियामेंश्रापैआपहँसाई ॥ लज्जा बैरिनि भानो

ठानोमंजुलबोलैं । प्यारेप्रीतमजूसोंकीजैकामकलोलैं १९१ ॥ विद्याधारीछन्द ॥ विद्याहोतीवैमोंमेंआनन्दैकारी। आपतकालेजीकीशिक्षादेनेयारी ॥ सुक्खदुःखैहोतेनाहीं होतीन्यारी । तातेहूजैमेरेभाईविद्याधारी १९२ ॥ रोला ॥ रविछबिदेखतघूघूघुसतजहांतहँआगत । कोक निकोताहीसोंअधिककहियोअनुरागत ॥ त्योंकारेकान्ह हिलखिनलुनतिहारोपागत । हमकोतौवाहीतेजगत उज्यारोलागत १९३ ॥ पचीसमात्राकेछन्द ॥ दोहा ॥ गगनं गादिपचीसकलभेदहोतहैंलाख । इकहससहसरुतीनि सैतिरानबेपुनिभाख १९४ ॥ पुनः ॥ सौकलचारि पचीसकोछन्दजातिगगनंग । पगपगपांचौंगुरुदियेअ तिशुभकह्योभुजंग १९५ ॥ गगनंगनाछन्द ॥ निरखिसौति जनहृदयनिरहैगरडकोडंगना । पटतरहितसतकविके मनकोमिटैफलंगना ॥ बदनउघारिदुलहियाक्षणकुंबैठि करिअंगना । चन्दप्रराजयसाजहिं लजितकरहिगगनं गना १९६ ॥ छब्बिसमात्राकेछन्द ॥ दोहा ॥ छब्बिसकलमें चंचरी आदिलाखगतिलेहु । सहसत्रानबेचारिसै अ ठारहकहिदेहु १९७ ॥ पुनः ॥ तीनिरगनात्रियहिदै रात चञ्चरिचारु । सोरहदशजतिअन्तगुरुनामविष्णुपदधा रु १९८ ॥ चंचरीछन्द ॥ फागुफागुनमासबीततधामधाम निछारिडकै । चैतमेंबनबागवापिनिमेंरहैबपुसारिडकै ॥ फूलरंगसजैलताद्रुमभौंरवाधवजावहीं । कीरकोकिलसा रिकामिलिचंचरीकलगावहीं १९९ ॥ विष्णुपदछन्द ॥ कैसे कहोंसहससुरपतिसेसिगरेदृष्टिपरै । दासशेश सतसह स्रयोगकहहकोकहतडरै ॥ कह्योलिरूयोचाहैजानदेखतू

निजओरतकै। हैयहसहसहजारविष्णुपदमाहिमालिखि नसकै २००॥ सत्ताईसमात्राकेछन्द॥ दोहा॥ हरिपदआहि सताइसैजानैछन्दअनेक। तीनिलाखसत्रहसहसआठै सैदशटेक २०१॥ हरिपदछन्द॥ विथाऔरउपचारअ बतुकरैसुकौनेज्ञानु। अजौंनकछूनशान्योमूरुखकह्योह मारोमानु॥ पापविवशगौतमकीतियजोमतिकैरहीपषा नु। तासुभगतिजोदासचहैतौहरिपदउरमेंआनु २०२॥ अट्ठाईसमात्राकेछन्द॥ दोहा॥ अट्ठाइसमेंगीतिकाआदिकक ह्योफणीश। पांचलाखचौदहसहसद्वैसैपरउनतीस २०३॥ लक्षण॥ चारिसुगणध्वजगीतिका भरननजभयनरिन्द। अनियमवरननरिन्दगति दोवैकह्योफणिन्द २०४॥ गीतिका॥ यहिभांतिहौहुनबावरीबलिचेतजीमहँल्यावहू। वृषभानुकीयहभौनहैकहकान्हकान्हबतावहू॥ सुसुकाति हौकिहिदेखिकैकहिदेखिगातगोवावहू। करबीनलैअति लीनह्वैयहगीतिकाहिसुनावहू २०५॥ नरिन्दछन्द॥ सिंह विलोकिलंकमृगहगवरुचालकरीमदधारी। जानहिंआ पुजातिनिजमनमहँकरैंप्रीतिअधिकारी॥ कोलकिरात भिल्लछविअद्भुतदेखहिंहोहिंसुखारी। रामविरोधसुखहि वनविचरहिंराजनरिन्दकुमारी २०६॥ दोवैछन्द॥ तुमबिछुरतगोपिनकेअँसुवाब्रजबहिचलेपनारे। कछुदि नगयेपनारेतेवैउमड़िचलेज्योंनारे॥ वैनारेनदरूपभये अबकहोजाउकोइजोवै। सुनियहबात अयोगयोगकीहै हैसमुदनदोवै २०७॥ उन्तीसमात्राकेछन्द॥ दोहा॥ उनति समत्ताभेदमेंमरहट्टादिकदेखि। आठलाखबत्तिससहस चालिसभेदविशेखि २०८॥ मरहट्टाछन्द॥ सुनिम्रा

लह्वितियउरजनकीनाईं निपटहिप्रकटनहोई। अरुगु
ज्जरयुवतिपयोधरकीबिधि निपटनराखहुगोई॥ करिप्र
कटदुरेकेबीचराखिये योंअक्षरकीचोज। ज्यहिबिधिमर
हट्ठबधूराखतिहैं बिचकंचुकीउरोज २०९॥ तीसमात्राके
छन्द॥ दोहा॥ तीसमत्तमेंसारंगीचतुरपदीचौबोल। तेर
हलखछयालिससहसदुसैउन्हत्तरिडोल २१०॥ पुनः॥
तिथिगसारंगीचतुरपद छिकलसातचौमत्तु। तीसमत्त
चौबोलहैसोरहचौदहतत्तु २११॥ सारंगीछन्द॥ देखोरेदेखो
रेकान्हादेखोदेखोधावोजू। कालिंदीमेंकूद्योकालीनागैना
थ्योलावोजू॥ नच्चैबालानच्चैग्वालानच्चैकान्हाकेसंगी। ब
ज्जैभेरीरूदंगीतरूबूराचंगीसारंगी २१२॥ चतुष्पदछन्द॥
संगरहेइन्दुकेसदातरैया तिनकेजियअभिलाषै। भुवन
जनितकटिबरषाऋतुको तिहिइन्दुबधूसबभाषै॥ यहजा
निजगतमेंरूपरूखीछैबासरसुमतिबतावै। अतिकूरक
कारकरूपबिनचीन्हेपरमचतुरपदगावै २१३॥ चौबोलछन्द॥
सुरपतिहितश्रीपतिबामनह्वैबलिभूपतिसोंछलहिचह्यो।
स्वामिकाजहितशुक्रदानहूं रोक्योबरुदृगहानिसह्यो॥
सुमतिहोतउपकारलाखहितौझूठोकहतनशंकगहै। पर
अपकारहोतजानहितौकबहुंनसांचोबोलकहै २१४॥
इकतीसमात्राकेछन्द॥ दोहा॥ इकतिसमत्ताभेदमें छन्दसवै
याजोहि। एकलाखअठहत्तरै सहसतीनिसैनोहि २१५॥
सवैया॥ अरबखरबतेलाभअधिकजहँचिनहरहासिल
लादपलान। सेतिहिलयेदेखैक्षाराजीऔरहिदेनअप
नोज्यान॥ ऐसोरामनामकोसौदातौहिंनभावतमूढ़अ
यान। निशिदिनजातमोहवशदौरतकरतसवैयाजन्म

सिरान २१६ ॥ रूपसवैयाछन्द ॥ दोहा ॥ रूपसवैयाबत्तिसै कलालाखपैंतीस ॥ चौबिससहसरुपांचसै अठहत्तर बिधिदीस २१७ ॥ लक्षणप्रतिलुक ॥ आठोकर्नापायेदीन्हे ब्रह्माछन्देजानोधीरा। सातोहारासुप्रीमोपुनिसुप्रीमोगुर हैमंजीरा॥ करिहाराभोगहिकर्नापीमहिमागोशम्भूकोअं सी। आठोमोनोठानोंडंडोगुरयुगसहितपरमछबिहंसी॥ मत्ताक्रीड़ाचारोकर्नायकलचतुर्दशगुरुतलधरिये। सालू रकरबियगुरछबिसलघुभलपरप्रकटबहुरिगुरुकरिये॥ जानिकऊँचौगोलथगोलथ दुजकरित्रिगुणसगुनभरप रत्यै। भोततुनीतोलगानिलखिययेतन्वीकीहै॥ गोबिन्दा तेरीइच्छाकेतीशम्भूब्रह्माठानैजू। तूहीसंसारैबिस्तारै तूहीपालैओज्यावैतू २१८ ॥ मंजीरछन्द ॥ मोह्योरीआली मेरोमनश्रीवृन्दाबनशोभादेखै। देखेरीझैगीतोहूँअति मैंहींभाषतिरेखारेखै॥ एरीकान्हातूकोनितनकोऊचित्त नराखैधीरा। जोटीजोटानबैग्वालिनिवज्जैझालरिओ मंजीरा २१९ ॥ शम्भूछन्द ॥ तियअरधंगाशिरमेंगंगाग लभोगीराजाराजैजू। निरखैमत्तानिजनाचत्ताडमरूडौ डौडौबाजैजू। संगबेतालीकरदैतालीसुखदानीबानीगा वैजू। धनिप्रानीतेजगुजानीजेनितऐसोशम्भूध्यावैजू २२० ॥ हंसीछन्द ॥ जाकोजीजासोंपाग्योसोसहजउत दपिसुखदअतिहोई। जोनाहींजीकोभावैसोअतिशुभस मुझिचहतकिमिकोई॥ कलबकीकोकैसेभावैयदपिमुकुत अतिजगतप्रशंसी। संसारोंनीकोलागैपैअनकनकबहुचु गतिनहिंहंसी २२१॥ मत्ताक्रीड़ाछन्द॥ काहूकोथोरोदोषीकैस हनकहतप्रभुपरमविपतिको। सोतोजानैसंसारैनारदसन

भगतसहउदुखअतिको ॥ काहूकाहूभूलेभूलेत्रिभुवनप तिबकसतशुभगतिको। देखाहाथीमत्ताक्रीड़ाजलमहँकर तनरहेउभगतिको २२२॥ तालछन्द॥ सौदामिनिघनजिमि बिलसतहरिपरिहरिपियरपटसखिउहिरुखमें । देखतक लुषभयोदिनउडुगणहुतभुकपरियरुइयघनदुखमें ॥ त्यों हींइहिरुखकुँवरियमुनतटनिरखिवरखतसुखसुखमें। सा लूरङ्गसङ्गलसतसुतनरुचिलनरुचिसरिचमकतितिमिमु खमें २२३॥ क्रौंचछन्द॥ सेरनकैसीपौरुषप्रातैंकिमिकरिकह उडुगणबिचवरणी । क्यौंशुकसारीलौंपढ़िजानैंयत्ननिक रिबकऔधकघरणी ॥ ज्ञानियबिद्याजानुजनायेनहिंजड़ कबहुँबुधनियहवरणी । तूलक्रौंचोक्योंकरिहंसैगनिगनि धरतधरतपगधरणी २२४ ॥ तन्वीछन्द ॥ देखिसशेकैंअम लजत्तमैंलोगबखानतसाहिजुठहाई । आननशोभातरु णिप्रगटिकैजीतनश्वेतबसनसजिआई ॥ फूलसरनिसों मुग्धनिबसकै जाहिरभोजगमन्मथधन्वी । जीतनताको चितवनिशरसो धीरप्रबीनसकलकरितन्वी २२५ ॥ सु न्दरीछन्द ॥ दोहा ॥ ससगबिप्रदुगसारवति छन्दसुन्दरीजा न ॥ पदपदमत्तबतीसगनि चौबिसवर्णप्रमान २२६ ॥ सुन्दरीयथा ॥ कुचकीबढ़तीयोंछिनछिनकीमेरोमनदेखतरी झिगयो । दरकीअँगियाचारिकपहिरे अरुचारिककोटु टिबँदगयो ॥ कटिजातपरीहैखिनखिनखीनी याबिधि यौवनजोरठयो । जबहींतबनीबीकसतहिदेखैसुन्दरिको दिनहैकभयो २२७॥दोहा॥ इमिद्वैतेबत्तीसलगि वृत्तिबान वेलाख ॥ सत्ताइसहजारपर चौसैवासठिभाख २२८ ॥

इतिमात्राप्रस्तारछन्दबर्णनंनामपञ्चमस्तरंगः ५ ॥

अथमात्रामुक्तकछन्द ॥ दोहा ॥ घटैबढ़ैकलदुकलहू वहैमे
दअभिराम ॥ तेहिगनिमत्ताछन्दके मुक्तकमेंगुणधाम १
चित्रतथाबनीनीछन्द ॥ दोहा ॥ सोरहसत्रहकलनिको चित्र
बनीनीहोय ॥ चारिचौकमेंतीसरो यगनकहैसबकोय २
यथा ॥ लीन्हीजिनमोलभायचोखे । दीन्हीतुमकोबिथा
अजोखे ॥ कीजैअँखियानकीकनीनी ।ल्याईसुविचित्रहो
बनीनी ३ नँदलालगनेनशीतऔघाम । सेवैतुवद्वार
आठहूयाम ॥ फूँकतीतुमतासुलेतहीनाम । पविचाहि
कठोरतोहियोबाम ४ ॥ दोहा ॥ सत्रहअट्ठारहकलनि छ
न्दहीरकीतन्त ॥ नन्दभुजनिबिरमतिचलै दुकलत्रिक
लहूअन्त ५ ॥ यथा ॥ दासकहैबुधिथकैधीरकी । देखि
प्रभाअद्भुतपटीरकी ॥ बेसरिकीकेसरियाचीरकी । चा
रुनीकीढारनीकीहीरकी ६ ॥ पुनः ॥ दन्तनकीचारुचमक
देखिदेखि । बिज्जुछटामन्दप्रभालेखिलेखि ॥ मोहित
कैदासघरीचारिचारि । कोनचलैजीवनधनवारिवारि ७॥
दोहा ॥ अट्ठारहवनइससकल छन्दभुजंगीमानि ॥ नैन
ततगहैचन्द्रिका वाकीगतिपहिंचानि ८ ॥ भुजंगीछन्द ॥
ललालाडिलीकीलखीपीठिमें । तहांश्यामबेणीपरीडी
ठिमें ॥ मनोकांचनीकेदलीपत्रहे । भुजंगीपरीसोवतील
त्रहे ९ ॥ चन्द्रिकाछन्द ॥ कुरबकलखौहूकरैबोलिकै । छिर
दगतिहरैमन्दहीडोलिकै ॥ दशनद्युतिलजीलीकरैदासि
नी । हसनिसनजितेचन्द्रिकाभामिनी १० ॥ नांदीमुखी ॥
दोहा ॥ पंचलहूपरमगनत्रय नान्दीमुखीबिचित्र ॥ गति
लीन्हीनियमोतजे वहेनामहैमित्र ११ ॥ यथा ॥ जन्म
प्रभुलियोअवधमेंलूटिमांची । लुट्योसबसबनिअरतुए

कौनवांची ॥ द्विजनाक्रियबिदावाकवादैसुखीकै। नृपति जबउठेश्राद्धनांदीमुखीकै १२ ॥ दोहा ॥ वोनईसकैबीस कल छन्दहोतचितहंस। नन्दकरनद्वैअंतरो कैहैरल अवतंस ॥ पद्मबैठकमुक्तभोजनछोड़िकै। तूसहैदुख भूखकोपनुबोड़िकै ॥ दासहासकरैघनेबकबंसरे। तोहि ह्यांवसुबासउचितनहंसरे १३ ॥ पुनः ॥ भौंरनाभीबीच गोतेखाइखाइ। बूड़िगोरीचित्तमेरोहाइहाइ ॥ चाहि गिरिमिरिगाहितिरितिरिफेरिफेरि। दासमेरेनयनथाके हेरिहेरि १४ ॥ सुमेरुछन्द ॥ दोहा ॥ कलवोनइसैबीसको छन्दसुमेरुनिबेरि ॥ लहूमगनलहुभगनयों कहूँअन्तल हुफेरि १५ ॥ यथा ॥ कैकोवाकुचरचालोगआली। लु गाईक्याकरैंगीकैकुचाली ॥ प्रभाजोकान्हजूकोऊतरी है। सोमेरेनयनदूकीपूतरीहै १६ ॥ प्रियाछन्द ॥ दोहा ॥ बाईसैतेईसकल छन्दप्रियापहिंचानि ॥ चखनिचारुसं गीतकी बरणलहैं सुखदानि १७ ॥ यथा ॥ तोछूटतछूटी सिगरीशीतलई है। योंअंगसबैवादिनतेआगिभईहै ॥ राखैरहिहैदासहमैंदूरिहियासों। योंपथीसंदेशोकहिवी प्राणप्रियासों १८ ॥ हरिप्रियाछन्द ॥ दोहा ॥ बीसइकीसौ बाइसौ कलाहरीप्रियछन्द ॥ तीनिछकलपरदेहुगुरु न न्दकिहैगुरुबन्द १९ ॥ यथा ॥ हरतिजुहैदीननकोसंकट बहुतहै। बिनवतातिहिचितवनिहितदासदासहै ॥ कर निहरनिपालनितूदेविआपुही। शम्भुप्रियाब्रह्मप्रिया हरिप्रियातुही २० ॥ पुनः ॥ करतिजुहैदीननिकेसंकटको हीन। बिनवतातिहँचितवनिहितदासदासदीन ॥ करनि हरनिपालनितूदेविसबठौर। शम्भुप्रियाब्रह्मप्रियाहरि

प्रियानओर २१ ॥ पुनः ॥ हरतिजुहैदीननिकोसंकटबहुते
रे । बिनवततिहिचितवनिहितदासदासतेरे ॥ करनि
हरनिपालनितूदेविआपुहीहै ॥ शम्भुप्रियाब्रह्मप्रियाह
रिप्रियातुहीहै २२ ॥ दिगपालछन्द ॥ दोहा ॥ होतछन्ददिग
पालकल बाईसोतेईस ॥ चौबीसोपूरोभयो हैदूनोदि
गईस २३ ॥ यथा ॥ सोपायआजुडोलैमहीशीतधूप
में । विधिबुद्धितुच्छजाकीमहिमाअनूपमें ॥ हरजासुरू
परखेहियेबीचसबदाहि । दिगपालभालजाकीरजराज
तीसदाहि २४ ॥ पुनः ॥ सखिप्राणकीसँघातीप्यारीनहीं
लगैरी । सुखदानिबानितेरीअतिदूरिकोभगैरी ॥ अलि
कान्हप्राणमेरोनिजसाथलैगयोहै । मनुआपुनोनिमोही
वहमोहिंदैगयोहै २५ ॥ अबिधाछन्द ॥ सग्गनारग्गनाज
गंनुलगौ । रग्गनारग्गनातकोरदगौ ॥ अबिधाछन्दपाय
नागकहन्त । सोरहोसत्रहोअठारहमन्त २६ ॥ यथा ॥ का
न्हकीत्योंरतेगचोखीहै । रीतियामेंकह्याअनोखीहै ॥ प
विसेमोंहियेजुलागिउठै ॥ अबिधाज्योंबियोगआगिउठै
२७ ॥ सायकछन्द ॥ सगनागीसगनागोसगना । रगनादी
हुनहींदोसगना ॥ लहुआद्यन्तपरेसत्रहलेखि । नामहै
सायकयाछन्दहिदेखि २८ ॥ यथा ॥ अँखियांकाजरकी
कोरनहीं । भृकुटीओतिरछीतोरनहीं ॥ दासयेप्राणनके
घायकहैं । बिसुहैंखंजरहैंसायकहैं २९ ॥ भूपछन्द ॥ सग
नागोसगना । रग्गनाआदिभना ॥ लहुवोअन्तभलोइ ।
भूपशिवसरकलोइ ३० ॥ यथा ॥ भावतीजातिकितै ।
नेकुतौताकिइतै ॥ तेरोईघायलहौं । भूपसोहायलहौं
३१ ॥ मोहनीछन्द ॥ सगनागोसगनागोसगनागोसग

ना। रगगनाआदिदियेहुनकछूदीसगना॥ बाईसैतेईस कलअन्तलहूचौबिसहोइ। मोहनीछन्दकहैंयाहिसयाने सबकोइ ३२॥ यथा॥ ढूँढेहूहैनतितीपंकजकेकाननमें। सुखमादासजितीमोहनकेआननमें ॥ नतितीजानिपरै मन्मथकेबाननमें। मोहनीरीतिजितीहैबँसुरीताननमें ३३॥ अथगीताप्रकरण॥ दोहा॥ चौबिसकलगतिचञ्चरीरूप मालपहिंचानि। लघुदैआदिपचीसकल सुगीतिकाउर आनि॥ छबैआदिछबीसकरि गीताकहौंबिशेखि। गुरुदै अन्तसुगीतिके शुभगीताअवरेखि॥ करिगीतागुरुअ न्तहरि गीताअट्ठाईस। अन्तलहूअतिगीतकरि सताइ सौउनतीस ३४॥ अथरूपमालायथा॥ जातिहैबनबादिहीग लबांधिकैबहुतंत्र। धामहींकिनजपतकामदरामनामसुमं त्र॥ ज्ञानकीकरिगूदड़ीदृढ़नरत्नतिलकबनाउ। दासपर नअनूपसगुनसरूपमालागाउ ३५॥ सुगीतिकाछन्द॥ हजारकोटिजुहोयरसनाएकएकमुखग्र। इड़ाअरविन जोबसैरसनानिमण्डिसमग्र॥ खरोरहैदिगदासतनुधरि देवपरमपुनीत। कहैकछूअहिराजतबन्नजराजतुवजस गीत ३६॥ गीताछन्द॥ मनबावरेअजहूंसमुझिसंसारअ मदरियाउ। इहितरनिकायहछोड़िकैकछुनाहिंऔरउ पाउ॥ तैसंगभक्तिमलाहकरिआरूपसोलैलाउ। श्रीराम सीताचरितचरचाशुभगीतानाउ ३७॥ शुभगीताछन्द॥ त्रि लोकिदुलहिनिबेलिकेलनफूलमालबिराजई। रसालदूल हशीशसुन्दरमौरकीछबिछाजई॥ बसन्तकेगृहआजव्या हउछाहपरमपुनीतहै। चकोरकोकिलकीरभामिनिगाव तीशुभगीतहै ३८॥ हरिगीतछन्द॥ बनमध्यज्योंलखिसा

जसंयुतव्याधव्रासहिसज्जतो। पशुपक्षिमृगयायोगानि जनिजजीवलैलैभज्जतो॥ त्योंमोहमदपैशुन्यमत्सर भाजिजातसभीतहै। जवदासकेउरभक्तिसंयुतज्योंसतो हरिगीतहै ३९॥ अतिगीताछन्द॥ चैतचांदनिमेंउतैमुरली बजाईनंदनन्द। तानसोवतितानकीगतितानकियबि धिबंदवन्द॥ तासमयवृषभानुनन्दिनिक्षांगईचलिफं दफन्द। मोहिमोहनऊगिरेअवलोकिकैमुखचंदचन्द ४०॥ शुद्धगालक्षण॥ यगनगुरूकरिचौगुनोछन्दशुद्धगाहो इ। अन्तघटैकलदुकलहूवहैकहैसबकोइ ४१॥ यथा॥ रूखेबैठीकहाबौरीअरीकान्हाकहांजैहैं। सुतोयाहीघ रीमैंदेखितेरेपासहीऐहैं॥ सिखायोमानिकैमेरोसिताश लैबजावैतू। सखीवाधौसकीनाईकेदाशशुद्धगावैतू ४२॥ लीलावतीछन्द॥ द्वैकलदैफिरतासकललीलावती अनेम। दुगुनपद्धरियकेकियेजानोवहैसप्रेम ४३॥ यथा॥ पीताम्बरमुकुटलकुटबनमालवैसोईदरशावै। मुसुकानिबिलोकनि मटकलटकबाढ़िमुकुरछांहतेछबिपा वै॥ मोबिनयमानिचलिवृन्दाबनबंशीबजाइगोधनगा वै॥ तौलीलावतीश्याममैंतोमैंनेकुनउरअन्तरआवै ४४ यथा॥ जेहिमिलतनतूतेहिरैनिसांझहीतेरटलावततोहि तोहि। अधरातउठतकरिहायहायपर्यंकपरतपुनिमोहि मोहि॥ कबकोढिगठाढ़ेहहाखातयहाखिन्नगातगतिजो हिजोहि। जियकेवलतूयहलालहालदिनरैनिबिसासि निकोहिकोहि ४५॥ इतिश्रीदासकृतेछन्दोर्णवेमात्राके मुक्तछन्दवर्णनन्नामषष्ठस्तरंगः ६॥

अथजातिछन्दवर्णनं ॥ दोहा ॥ प्रस्तारनिकीरीतिसों करिकछुभिन्नविभाग। जातिछन्दवर्णनकियो बहुविधिपिंगलनाग १ ॥ दोहाप्रकरण ॥ तेरहग्यारहतेरहे ग्यारहदोहाचार। दोहाउलटसोरठा बिदितसकलसंसार २ ॥ दोहा ॥ मनबालकसमभाइये तुम्हैंबिनयरघुनाथ। ननरुबोलाये कौनके आवैचन्दोहाथ ३ ॥ दोहादोष ॥ प्रथमतीसरेचरणमें जगनजोहियेजासु। सोदोहाचण्डालिनी बोलैबिबिधबिनासु ॥ बारहलघुबाईसलघु बत्तिसलघुलेमानि। चारिबरणदोहाकही बाकीलघुलौंजानि ४ ॥ सोरठा ॥ सोवनदीजैधाइ भींजैनेकुबिभावरी ॥ अबैगहोजनिपाइ सोरठानिहैमेखला ५ ॥ अथदोही ॥ दोहाकेतेरहनिमें द्वैद्वैकलाबढ़ाइ। कीजैदोहीदोहरा एकोएकघटाइ ॥ जनिबांहगहोहोजानती लालतिहारीरीति। होनिमोहीनित्तके करोदोहीदिनकीप्रीति ६ ॥ दोहा ॥ जातनकनकतखोना लगतचौहरोलाल। मुकतमालहियते हरो दोहरोबेंदाभाल ७ ॥ उल्लाला ॥ करिविषमदलनिपन्द्रहकलासमपायनितेरहरहे। तुकराखिअट्ठाइसकलनिपरउल्लालापिंगलकहे ८ ॥ यथा ॥ कहिकाव्यकहाबितरुचिरमतिमतिसुकहाबिनहींबिरति। कहबिरतिउलालगोपालकेचरणनिहोइजुप्रीतिअति ९ ॥ चुरियाला ॥ दोहातलकेअन्तमेंऔरपंचकलवन्दनिहारिये। नागराजपिंगलकहैचुरिआलासोछन्दबिचारिये १० मैंप्रियमिलनअमीगुनोबलिबिसुसमुभिनतोहिंनहोरति। भटकिझटकिकरलाड़िलीचुरियालाखनकीकतफोरति ११॥ भुवाछन्द ॥ पहिलेहिबारहकलकरुबहुरेहुँसत्त। इहि

त्रिधिछन्दध्रुवारचुअनइसमत्त १२ ॥ यथा ॥ ध्रुवहिआं
ड़िजोअध्रुवसेवनजाइ । अध्रुवतासुनशैहैध्रुवहुनशाइ
१३ ॥ घत्ताछन्द ॥ दोहा ॥ दशअसुतेरहअर्द्ध में समुझिय
घत्ताछन्द । ग्यारहमुनितेरहविरति जानोघत्तानन्द १४
यथा ॥ मोहनमुखआगेअतिअनुरागेमैंजुरहीशशिछबि
निदरि । दुखदेतसुआखीबिनुबनमालीघत्तालहिचूकत
नअरि ॥ घत्तासखिसोवतमोहिंजानिकछुरिसमानिआ
इगयोगतिचोरकी । सोयोंढिगहिचुपाइकहिनहिंजाइ
घत्तानन्दकिशोरकी १५ ॥ दोहा ॥ हरिपददोवेचौबो
लो द्वैहीद्वैतुकजानि ॥ दोहाप्रकरणरीतिमें लिख्योदो
सउत्तमानि १६ ॥ अथ चौपैयाप्रकरण ॥ दोहा ॥ चारिचरणमें
जतिजमक तुकवरणनिकरिनेम ॥ जातिछन्दबरण्योअ
हिप सोऊसुनीसप्रेम १७ ॥ चौपैयाछन्द ॥ दोहा ॥ दशअसु
बारहविरतितें चौपैयापहिचानि ॥ चारिचरणचौगुन
किये होतनिपटसुखदानि १८ ॥ चौपैयायथा ॥ तलवित
लरसातलगगनभुवनतलसृष्टिजितीजगमाहीं ॥ पुरराम
सुथलमेंकाननजलमेंबाहिरहितकछुनाहीं ॥ पियमिलहि
नरामहितजिसियधामहिंनहिंबचाउकहुँभागे । सुरप
तिसुतकांचोसबजगनाचोबांचोपैआंलागे १९ ॥ लक्षण
प्रतितुक ॥ दशअसुदशाचारैविरतिविचारैपद्मावतितलगु
रुदोई । याहीविधिठानोदुर्मिलजानोअन्तसगनकरनो
होई ॥ दशवसुकरियोहींचौदहत्योंहींअन्तसगनहैदण्ड
कलो । दशवसुवसुसंगीपुनिरसरंगीहोतत्रिभंगीछन्द
भलो २० ॥ दोहा ॥ आठआठचौकलपरै चारैरूपनि
शंक ॥ भूलेहुजगननदीजिये होतछन्दसकलंक २१ ॥

पद्मावती ॥ ब्यालिनिसीबेनीललिखिबिसेनीतजतनुआशा मोरेंजू । शशिसोमुखशोभितलखियोलोभितलोचनत टकीचकोरेंजू ॥ निकसतमुखश्वासैंपाइसुवासैंसंगनछो ड़तभोरेंजू । बाहिरआवतिजबपद्मावतितबभीरजुरति चहुँओरेंजू २२ ॥ दुर्मिलछन्द ॥ इकत्रियब्रतधारीपरउप कारीनितगुरुआज्ञाअनुसारी । निरसंचयदातासबर सज्ञातासदासाधुसंगतिप्यारी ॥ संगरमैंशूरोसबगुनपू रोसरलसुभावंसत्तिकहै । निरदंभभगतिबरविद्यानिआग रचौदहनरजगदुर्मिलहै २३ ॥ दण्डकलाछन्द ॥ फलफूल निल्यावैहरिहिसुनावैयहहैलायकभोगनकी ॥ अरुसब गुनपूरीस्वादनिरूरीहरनिअनेकनिरोगनकी ॥ हँसिले हिकृपानिधिलखियोगीबिधिनिन्दहिअपनेयोगनकी । नभतेसुरचाहैंभागुसराहैंफिरिफिरिदण्डकलोगनकी २४ ॥ त्रिभंगीछन्द ॥ समुझियजगमेंकोफलमनमें हरिसुमिरन मेंदिनभरिये । झगरोबहुतेरोघेरुघनेरोमेरोतेरोपरि हरिये ॥ मोहनबनवारीगिरिवरधारीकुंजबिहारीपगुपरि ये । गोपिनकोसंगीप्रभुबहुरंगीलालत्रिभंगीउरधरिये २५ ॥ जलहरनछन्द ॥ दोहा ॥ लघुकरिदीन्हेंबत्तिसो जलहर नापहिंचानि ॥ तिरभंगीपरआठपुनि मदनहराउरआनि २६ ॥ यथाजलहरनछन्द ॥ सुदिलयउमिथुनरबिउमाड़िघुमाड़ि फबिगगनसघनघनझपकिझपकि । करिचलतिनिक टतनक्षनरुचिक्षन क्षनखगअबभरसमलपकिलप कि ॥ कछुकहिनसकततियबिरहअनलहियउठतक्ष णहिंक्षणतपकितपकि । अतिसकुचातिसखियनअधक रिअँखियनलगियजलहरनटपकिटपकि २७ ॥ मदनहरा

छन्द ॥ सखिलखियदुराईछबिअधिकाईभागभलाईजा
निपरैफलसुकृतफरै। अतिकान्तिसदनमुखहोतहिस
म्मुखदासहियेसुखभूरिभरैदुखदूरिकरै॥ छबिमोरपख
नकीपीतबसनकीचारुभुजनकीचित्तअरैसुधिबुधिबिसरै।
नवनीलकलेवरसजलभुवनधरवरइन्दीवरछबिनिदरै म
दमदनहरै २८॥ लक्षण॥ दोहा॥ एकैतुकसोरहकलनि
पायकुलकगुरुअन्त॥ चहुँतुकभागनयमकसो अलि
लाछन्दकहन्त २९॥ पायकुलक॥ हगआगेसोवतहुनिहा
रों। हियतेक्योंहरिरूपनिकारों॥ हौंनिजतनसमरतन
विचारों। केहिउपायकुलकानिसँभारों ३०॥ अलिल्ला
छन्द॥ भुवमटकावतिनयननचावति। सिंजितसिसकिन
शोरमचावति॥ सुरतसमयबहुरंगरचावति। अलि
ललनहितमोदसचावति ३१॥ सिंहविलोकित छन्द॥
दोहा॥ चारिसगनकैद्विजचरण सिंहबिलोकितयेहु॥
चरणअन्तअरुआदिके मुक्तपदग्रसदेहु ३२॥ यथा॥
मुनिआश्रमशोभधरयोतियहीं। अहिकचसँगबेसरिमो
रजहीं॥ जहँदासअहितमतिसकलकटी। करसिंहबिलो
कितगतिकरटी ३३॥ लक्षण॥ दोहा॥ रोलामेंलघुरुद्रपर
काव्यकहावैछन्द॥ ताआगेउल्लालदै जानहुछप्पैवन्द
३४॥ काव्यछन्द॥ जन्मकहाबिनयुवतियुवतिसुकहाबि
नयौबन। कहयौबनबिनधनहिंकहाधनबिनअरोगतन॥
तनसुकहाबिनगुणहिंकहागुणज्ञानहीनक्षन॥ ज्ञानकि
विद्याहीनकहाविद्यासुकाव्यबिन ३५॥ छप्पैछन्द॥ मा
लनयनमुखअधरचिबुकतियलुवाबिलोकिअति। निर्म
लचपलप्रसन्नरक्तशुभवृत्तिथकीमति॥ उपमाकहशशि

खञ्जकञ्जबिंबियगुलाबबर । प्रफुल्लितसुशोभधर ॥ खण्डथानथितिप्रातपक्ष
लदासआवतनचित । जुकलंकरहितयुगसरलहितडा
रगहतषटपदसहित ३६ ॥ लक्षण ॥ सिंहबिलोकनरीति
देदोहापररोलाहि ॥ कुण्डलियाउद्धतवरणत्रजतिअम्ब
तधुनिचाहि ३७ ॥ कुण्डलियाछन्द ॥ साईंसबसंसारको
सन्ततफिरतअसंग । कामजारिकीन्होभसमम्टगनैनी
अर्द्धंग ॥ म्टगनैनीअर्द्धंगदासआसनम्टगछाला । सुनि
येदीनदयालगलेनरशिरकीमाला ॥ सुनियेदीनदयालक
रोअजगुतसबठाईं । कर्णगहेकुण्डलियबिदितभयहर
गगोसाईं ३८ ॥ अम्टतध्वनिछन्द ॥ धुनिधुनिशिरखलत्रिय
गिरहिसुनतरामधनुशब्द। लगियशरभरिगगनमहिय
थाभाद्रपदअब्द ॥ अब्दनिनदकरिक्रुद्धकुटिलअरियुक्ति
मरतलरि । मुण्डपरतशिरिरुण्डलडतफिरिखड्गपकरि
करि॥ऋक्षप्रबलभटउद्धतसरकटमर्दततितिहिध्वनि। निर्त्त
तसुरमुनिमित्रकहतजयकृतिअम्टतध्वनि ३९ ॥ दोहा ॥
पायाकुलकत्रिभंगियो होतमुक्तपदग्रस्त । छंदकहतहु
ल्लासहैकरितुकआठसमस्त४० ॥ हुल्लासछंद ॥ कान्हजन्म
दिनसुरनरफूले। नभधरनिशिवासरसमतूले ॥ महितेम
हरिअवरिउड़ावैं। दिवितेदेवसुमननरषावैं ॥ सुमननबर
षावैंहर्षबढ़ावैंतजितजिआवैंयाननको। सजितियनरभेष
निसाहितअलेषनिकरहिंअशेषनिगानन्नको ॥ तिनलोग
निकीगतिदाननकीअतिनिरखिशचीपतिभूलिरहै । ब्रज
शोभप्रकासहिनंदविलासहिदासहुलासहिकौनकहै ४१॥
इतिश्रीमात्राजातिछन्दवर्णनंनामसप्तमस्तरंगः ७ ॥

दोहा ॥ जातिछन्दप्राकृतनिके निपटअटपटेढंग। दासकहैगाथादिदै तिनकीभिन्नतरंग ॥ विषमनिबारह कलशमनि पन्द्रहठारहबीश ॥ समपदतीजोगनयगन गाथाप्रकरणाईश १ ॥ लक्षण ॥ समपदगाहूपन्द्रहपन्द्र हअठारहठारहउग्गाहा। अट्ठारहपन्द्रहगाहाकहिपन्द्र हअट्ठारहबिग्गाहा ॥ बीसैबीसखन्धकलबीसैअट्ठारह समपदसिंहिनी। सबकेरबिकलविषमदलनिसमअट्ठा रहबीसैगाहिनी २ ॥ गाहूछन्द ॥ शिवसुरमुनिचतुरानन जाकोलहैनहींथाहू। पारवारकोउजाननहरिनामसमुद्र अवगाहू ३ ॥ उग्गाहा ॥ शिवमुनिसुरचतुराननजाकोकबहूँ नहींलहैथाहा। पारवारकोउजाननिहरिनामसमुद्रअव गाहा ४ ॥ गाहा बिगाहा अर्थ में जाति ॥ बारहलहुआविप्री बाईसाक्षत्रिनीगाहो। बत्तीसासोबैसीबाकीलहुहैशुद्रि नीबिगाहो ५ ॥ खन्धाछन्द ॥ जगनफल ॥ एकजगनकुल वन्तीदोइजगन्नागिहिनीसुहैसुनिबन्धो। जगनविहीनीर एडावेश्यागावोवहुजगन्नकोखन्धो ६ ॥ गाहिनी तथा सिंहिनी ॥ सुनिसुन्दरिमृगनैनीतूप्रभासमुद्रअवगाहिनीराजै। हंसगमनिपिकबैनीतोलंकबिलोकिसिंहिनीलाजै ७ ॥ लक्षिपदेगाहिनी ॥ चपलागाथा ॥ चपलागाथाजानोयहदोइज गन्नुहैसमेपाया। पिङ्गलनागबखानोगुरुदोइतुकंतमेठा या ८ ॥ दोहा ॥ ताहिजघनचपलाकहैं दलदूसरेजदोइ ॥ प्रथमदलहिमेंजगनुदै मुखचपलाहैसोइ ९ ॥ विपलगाथा ॥ प्रथमपायकलतेरहैसत्रहैमत्तहैबियनाथा ॥ तिसरेपय ग्यारहैचौथेसोरहैबिपुलागाथा १० ॥ रसिकछन्द ॥ दोहा ॥ ग्या हरग्यारहकलनिको षटपदरसिकबखानि ॥ सबलघुपहि

लेभेदहै गुरुदैबहुबिधिठानि ११॥ यथा ॥ हँसतचखत दधिमुदित। भुकतभजतमुखरुदित॥ असिततियनिमिलिरहत। रिसयुतविरतिहिगहत॥ अगणितछविमुखसिक। शशुतबनवरसरसिक १२॥ खंजाछन्द॥ दोहा॥ सात पंचलघुजगनगो मत्तायकतालीश॥ योंहींकरिदलदूसरो खंजारच्योफणीश १३॥ यथा॥ सुमुखितुअनैनलखिद्हगह्योभ्रमनिभ्रम गरलमिसिभवशनिशिगिलतनितहिकञ्जहै। निशिनिमित्तज्योंसुरतियनिमृगफिरतवनहिं वनहुअहरुअमदनसरथिरनरहतखञ्जहै १४॥ दोहा॥ खञ्जाकेदलअर्द्धपर द्वैगुरुदेसुखकन्द॥ आगेगाहाअर्द्धकरिजानहिंमालाछन्द १५॥ मालाछन्द॥ लगतनिरखतललितसकलतनश्रमकलितव्रज अधिपअंगवलितसुरतिशयसोहतीबाला। मरकततरुजनुलवढीफलिकनकलतामुकुटमाला १६॥ शिष्याछन्द॥ दोहा॥ पहिले दलमेंचौबिसै लघुपरजगनहिंदेहु॥ पुनिबत्तिसपरजगनुदैशिष्यागतिसिखिलेहु १७॥ यथा॥ शुभरदनिविधुबदनिगुणसदनिजगहदनिनहिंतोहिसरिष्यु। कुवरिसमविनयश्रवणसुनिसमुझिपुनि मनहिंगुनिनप्रियप्रतिरिसकुमतिशिष्यु १८॥ चूड़ामणिछन्द। दोहा॥ दोहागाहाकोकरो मुक्तापदग्रसबन्द॥ नागराजपिंगलकह्यो सोचूड़ामणिछन्द १९॥ यथा॥ दिनहींमेंदिनकरदिपै निशिहीमेंशशिज्योति। जगदम्बाद्युतिदिवसनिशि जगमगजगमगहोति॥ जगमगजगमगहोतीहोरीज्योंगोरीचिनगारै। चक्रवर्त्तिचूड़ामणिजाकेपगभूतलहाजारै २०॥ अथरडाछन्द॥ दोहा॥ प्रथमतीयपञ्चमचरण पहिलेजानिअखे

द॥ दूजोचौथेफेरिगुनि जानहिंरएडाभेद २१ ॥ यथा ॥ तेरहग्यारहकरभीबरनि। नन्दभुवनहरढरनिवोनइसरुद्रनोहनीअरनि। चारुसेनतिथिहरनितिथिरविमत्ताभद्रावरनि २२॥ दोहा ॥ तिथिरवितिथिहरतिथियनि राजसेनिरड्डाहि॥ तालङ्किनितिथिकलअधिक दोहासवतलचाहि॥ तालंकिनिरड्डातथा॥ बालापनबीत्योबहुखेलनि। युवागईतियकेलनि। रह्योभूलिपुनिसुतवितरेलनि। जियगलडारीतेरेजेलनि। अजहुँसमुभितजिमूरुखपेलनि। कालपहूँच्योशीशपरनाहिंनकोऊअड्ड। तजिसवमायामोहमदरामचरणभजुरड्ड २३ पांचचरणरचनाउपरदीजैदोहाअन्त। सातभेदअहिपतिकह्यो नवपदरड्डातन्त २४ ॥ इतिश्रीदासकृतेछन्दोर्णवेमात्राकेजातिछन्दवर्णनन्नामअष्टमस्तरंगः ८॥

अथमात्रादण्डकवर्णन ॥ दोहा ॥ छब्बिससोंबढ़िबर्णजो दंडकबर्णविशेखि॥ बत्तिसतेबढ़िमत्तजो मत्तादण्डकलेखि १॥ झूलनाछंद ॥ दोहा ॥ दशदशदशमुनिजातिचरण छन्दभूलनातत्त॥ दुकघलिरहुरुवोसैतिसो चन्तालीसोमत्त २॥ यथा ॥ पानिपीवैनहींपानस्त्रीवैनहींबामअरुबसनराखैननेरो। प्रानकेऐनमेंनैननेकैरह्योरूपगुणनामतेरो॥ विरहबशऐसेहीहैवैहीकेमहीराखिहैकैनहींप्राणमेरो। तोहिंतकियाहिसंदेहकेमूलनाभूलतोचित्तगोपालकेरो ३॥ दीपमाला॥ दोहा॥ दीपककोचौगुनकिये दीपमालसुखदानि॥ चालिसकलशिरद्वैघटै अन्तबढ़ेबिजयानि४॥ दीपमाला यथा॥ लहिकैकुहुयामिनीमत्तगजगामिनीचलीबनमिल

नकोनन्दलालाहि । कैसुघरमन्मथरचिस्त्रनेकौबेलिलै त्र्ल्योगाहिसहितशृंगारथालाहि ॥ संगसखीपरवीनऽ तिप्रेमसोलीनमानिआभरणज्योति छविहोतिबालाहि कैदासकेईशढिगजातिलीन्हे चलीभामिनीभाग्यसोंदी पमालाहि ५ ॥ विजया ॥ सितकमलवंशसीशीतकरअं शसीविमलबिधिहंसमीहीरवरहारसी । सत्यगुणसत्ल्ग लीसंतरसवंशसीज्ञानगौरवसीसिद्धिविस्तारसी । कु न्दसीकाससीभारतीवाससी सुरतरुनिहारसीसुधारस सारसी । गंगजलधारसीरजतकेतारसीकीर्त्तितवविजय कीशम्भुआगारसी ६ ॥ दोहा ॥ तीनितीनित्र्यारहबिरति दशजातिदैतुकठानि ॥ छन्दछियालिसमत्तको चञ्चरी करपहिंचानि ७ ॥ चञ्चरीकछन्द ॥ जाकीनाहिंआदिअंतज ननिजनकदेवकंतरूपरंगरेखराहिंथापकजगजोई । म च्छकच्छकोलरूप वामननरहरिअनूप परशुरामराम कृष्णबुद्धिकूकिसोई ॥ मधुरिपुमाधवमुरारिकरुणामय कैटभारिरामादिकनामजासुजाहिरबहुतेरो । कोमलशु भवासमंजुमुखमासुखशीलगंज ताकोपदकंजचित्तचंच रीकमेरो ८ ॥ इतिश्रीदासकृतेछन्दोर्णवेमात्राछन्दकेद त्तिजातिमुक्तकदण्डकवर्णनंनामनवमस्तरंगः ९ ॥

अथवर्णवृत्तिसंवर्णप्रस्तारभेद ॥ एकवर्णकोउक्ताप्रकरणतासु भेदद्वैकीजैपाठ । द्वैअत्युक्ताभेदचारि हैंमध्यातीनभेदहैं आठ ॥ चारिप्रतिष्ठासोरहविधिपांचैसुप्रतिष्ठाभेदब स । षट्गायत्रीचौंसठिसातैउष्णिकसौपरअट्ठाईस आठैवर्णअनुष्टुपद्वैसैछप्पनभेदकहतफणिराउ । गने

अक्षरकोवृहतीप्रकरणभेदपांचसौबारहठाउ ॥ दशौवर्ण कोपंगतिप्रकरणभेदसहसऊपरचौबीस । ग्यारहकोत्रि ष्टुपप्रकरणगनिदैहजारअरुअड़तालीस ॥ बारहकोज गतीप्रकरणतेहिभेदहजारचारिछानबे । तेरहअक्षरको अतिजगतीइक्यासिसत्तरपरबानबे ॥ चौदहकोसकरी सोरहैसहसतीनिचौरासीय । पन्द्रहअतिसकरीसहस बत्तीससुसातसैअरसठकीय ॥ सोरहअष्टिसहसपैसठि शतपांचछत्तीसअधिकलैधरी । सत्रहकोअत्यष्टिलाख परयकृतिसहसबहत्तरिकरी ॥ अट्ठारहधृतिछब्बिस ऐतुइकीससैऊपरचावालीस । बावनऐतुबयालिससैअ ठासीविधिअतिधृतिवनईस ॥ बीसबरणकोकृतिप्रकर णहैतासुभेदगनिलेदशलाखु । अड़तालीससहसपांच सैओरछिहत्तरिऊपरराखु ॥ यकइसबरणप्रकृतिप्रकर णहैबीसलाखपहिलेसुनिमित्त । सत्तानबेसहसएकसैबा वनऊपरदीजैचित्त ॥ छन्दहोयबाईसवर्णकोआकृति प्रकरणजानिअखेद । यकतालीसलाखचौरानबेसहस तीनिसैचारिभेद ॥ छन्दकहावैविकृतिप्रकरणतेइसवर्ण होहिंजेहिमाह । लाखतिरासीसहसअठासीछासैआठग नैअहिनाह ॥ संस्कृतनामबरणचौबिसकोतासुभेदहैएक करोरि । सतसठिलाखहजारसतहत्तरिदुइसैऊपरसोरह जोरि ॥ अतिकृतप्रकरणबरणपचीसैतीनिकरोरिलाख पैंतीस । चौवनसहसचारिसैबत्तिसभेदबिचारिकहत फणिईस ॥ उत्कृतिहोतबरणछब्बिसकोभेदछकोटियकह त्तरिलक्ष । आठहजारआठसैचौसठिक्रमतेदुगुणबढै परितक्ष ॥ तेरहकोरिबयालिसलक्षोसत्रहसहससात

सैहोय । छव्विसअधिकजोरिसबभेदनठीकदियोचाहैजो
कोय १ ॥ दोहा ॥ सबकेकहतउदाहरण बाढ़ैग्रंथअ
पार ॥ कहूँकहूँतातेकहत बरणछन्दबिस्तार २ ॥ लक्षण ॥
दोहा ॥ एकगुरूश्रीछंदहै कामाद्वैगुरुवन्द । ध्वजाएक
महिनंदयक सारसपियमधुछन्द ॥ तीनिबरणप्रस्तारजो
म य र स त ज भ न पाठ । आठौगणतेदासभनि
छन्दहोतहैंआठ ३ तालीससीप्रियारमनि अरुपञ्चाल
नरिन्द ॥ आठसहितमंदरकमल म य र स त ज भ न
छन्द ४ ॥ चारिबरणकेछंद ॥ सोरठा ॥ तिर्नाक्रीड़ानंद रा
माधरानगान्निका ॥ कलातरणिजाछंद गनिगोपालमुद्रा
हिपुनि ५ धारीबीरोकृष्ण बुद्धीनिशिहरिसोरहो ॥ भेद
कहतकबिजिष्ण चारिबरणप्रस्तारके ६ ॥ दोहा ॥ मत्त
पथारहुमेंपरैं उदाहरणयेआइ ॥ तिर्नाक्रीड़ानन्दअरु
धरागोपालसेवाइ ७ ॥ तिर्नाछन्द ॥ धर्मज्ञाता । निर्भय
दाता ॥ तृष्णाहिन्नो । जीवैतिन्नो ८ ॥ क्रीड़ाछन्द ॥ हमारी
सोहरैपीड़ा । कलिन्दीजोकरैक्रीड़ा ९ ॥ नन्दछन्द ॥ योंन
कीजै । जानदीजै ॥ होकन्हाई । नन्दआई १० ॥ धराछन्द ॥
सोअन्यहै । औगन्यहै । सीतावरै । जोहीधरै ११ ॥ दोहा ॥
अकइसगणबाहुल्यतें छन्दहोतबहुभांति ॥ दासदेखावै
भिन्नकरि तेहितरंगकीपांति १२ ॥ लक्षण ॥ यारसतजभ
गननिदुनोभरु । छहोछन्दकेनामसमुझिधरु ॥ शंखना
रिजोहातिलकाकरि । मंथानोमालतीदुमन्दरि १३ ॥
शंखनारीछन्द ॥ लखेशुभ्रग्रीवां । महाशोभसीवां ॥ परेवा
कहारी । कहाशंखनारी १४ ॥ जोहाछन्द ॥ रूपकोगर्वछै ।
भूलतीपर्वबै ॥ सुरुयनौसाथमें । लालजोहाथमें १५ ॥

तिलकाछन्द ॥ अधिकोमुखहो । कियचंद्रशोहोसो ॥ अजि कैसखियों । तिलकाजरसों १६ ॥ मंथानछन्द ॥ गोविन्दको ध्यानु । सारंसतूजानु ॥ विद्यामहीमानु ॥ हैज्ञानमंथानु १७ ॥ मालतीछन्द ॥ लखोबलिबाल । महाछबिजाल ॥ लसैउरलाल । सुमालतिमाल १८ ॥ दुमन्दरछन्द ॥ बाल पयोधर । मोहियसोहर ॥ मानुसुअन्दर ॥ मानुदुमन्दर १९ ॥ लक्षण ॥ दोहा ॥ तीनिनन्दगसमानिका चामरसात अनूप ॥ पांचनन्दगोसैनिका धुजलसेनिकारूप २० ॥ समानिकाछन्द ॥ देविद्वारजाहितू । बोलिपाहिपाहितू ॥ राखि हैकृपानिकै । खासदासमानिकै २१ ॥ चामरछन्द ॥ बाल केसुदेशकेशकालिंदीप्रभादली । पन्नगीकुमारकीसेवार कीकहांचली ॥ याऽयथाफिरैनिकुंजकुंजपुंजभामरी । कामधेनुपायरोरहैअतेयचामरी २२ ॥ सेनिकाछन्द ॥ चली प्रसूनलेनवृन्दबाल । सुमंजुगीतगावतीरसाल ॥ बिलोकियेप्रभाअनूपलाल । बनीस्वरूपसेनिकाबिशाल २३ ॥ लक्षण ॥ दोहा ॥ चारिमल्लिकाचंचला आठगन्ददशनन्द ॥ प्रमाणिकाधुजचारिको । आठनराचसुछन्द २४ ॥ मल्लिकाछन्द ॥ चित्तचोरिलेतपौन । मन्दमन्दठानिगौन ॥ मोहनीबिचित्रपास । मल्लिकाप्रसूनबास २५ ॥ चंचलाछन्द ॥ श्यामश्याममेघओघव्योममेंअलीलसैन । ल्याइयो प्रसूनबाणकालकीअपारसैन ॥ होतिआजुकालिहमेंबियोगिनीनप्राणहानि । चञ्चलानचैनमीचुनाचतीचहूँदिशानि २६ ॥ गंडतथाचित्रछन्द ॥ रामरोषजानिहारलाभमानिशम्भुजोनचैउताल । पाइकैमृदंगशोरआवईकुमारकोमयूरहाल ॥ होइतोकुतूहलैबिलोकिशुंडकोचलै

डेराइव्याल। चौंकिचिग्घैरगणेशगुंजिगएडतेउडैमलि न्दज़ाल २७॥ प्रमाणिकायथा॥ नहैसमयघटानिकी। स लाहमानठानिकी॥ जताइजाइदामिनी। सुक्षिप्रमानि कामिनी २८॥ नराचछन्द॥ मृगाक्षिएकद्वारतेसुभावही चितैगई। कह्योनजाइमोहियेअघाइघाइकैगई॥ प स्योप्रतीतिआजुमोहिंदासचैनसांचुहै। खरोनराचतेति याकटाक्षफोनराचुहै २९॥ लक्षण॥ भुजंगप्रयातलक्ष्मी धरनाम। सतोटकसारँगमोतियदाम॥ समोदकदास छभेदविचारि। परोसतजोमनचौगुणधारि ३०॥ भुजं गप्रयात॥ छुटेबारदेखेधरेमोरपाखे। बिनाडीठिकीकैगई वृन्दआखे॥ जितेसर्वशृंगारवेणीप्रभासों। भुजंगोप्र यातोत्रपापाइजासों ३१॥ लक्ष्मीधरयथा॥ शंखचक्रोग दापद्मजाहाथमें। पक्षिराजाचढ्योवैष्णोसाथमें॥ दास सोदेवध्यावैसदाजीयमें। जोरहैचारुलक्ष्मीधरेहीयमें ३२ तोटकछन्द॥ घरहाइनघैरवगारनुदे। हरिरूपसुधाउरधार नदे। तलफैअँखियानकिटारनदे। अबतोटकलाइनि हारनदे ३३॥ सारंगछन्द॥ कीजैकुहूजानिक्योंशशिको भंग। वेगैचलोश्यामपैसाजियाढंग। कस्तूरिहीलेपकै लेहिसबंग। प्यारीसजैआजुसारीनिसारंग ३४ मोती दामछन्द॥ तमालकेऊपरहैबकपांति। किनीलशिलापर संतजमाति॥ नक्षत्रनिअंकतियेघनश्याम। किश्याम हियेपरमोतियदाम ३५॥ मोदकछन्द॥ नारिउरोजनती निकुरोजनि। कान्हउचाटभरेजिउरोजनि॥ लीवेहैकूबरी कोचरणोदक। कूबरजासुबशीकरमोदक ३६॥ लक्षण॥ दोहा॥ अंतभुजंगप्रयातके लघुइकदीन्हेकंद। तीनिभ

गनहैगुरुदिये बंधुदोधकोछंद ३७ मोदकशिरकैबंधुशि र हौलघुतारकबंद। पंचसगनभ्रमरावली छयगणक्रीड़ा छंद ३८ पंचभगनगुरुएकको छन्दकहावैनील। तीनि सगनशिरकरणहै हैमोटनकसुशील ३९ ॥ कन्दछन्द ॥ चहूँओरफैलाइहैचन्द्रिकाचंद। खुलैगीसुगंधैफुलैगीलताछंद॥ जगत्प्राणत्योंडोलिहैंमन्दहीमंद। कबैचेतुएहैचिदानन्दकोकंद ४० ॥ बंधुछंद ॥ आरततेअतिआरतहैजू। आरतवंतपुकारतहैजू॥ दासहूकोदुखदूरिबहायो। तौप्रभुआरतबंधुकहायो ४१ ॥ तारकछन्द ॥ पश्यंकमयंकमुखीचलिऐहै। सविलासबिलोकिहियेलगिजैहै॥ बिरहागिभरोहियरोसियरैहै। करतारकबैवहबासरऐहै ४२ तजिकैदुखगंजहजारकजारक। कतसोवतभूमिभटारकटारक॥भजिलैप्रहलादउबारकबारक। जगकोनिस्तारकतारकतारक ४३ ॥ भ्रमरावलीछन्द ॥ चलिबीसबिस्वेउहिआजुहिल्यावतहों। तुम्हरेहियकीसबतापबुझावतहौं॥ इनकीरचकोरनदूरिकरोबनते। भ्रमरावलिवेगिबिहारहुकुञ्जनते ४४ ॥ क्रीड़ाछन्द ॥ दुहूँओरबैठीसभाशुभ्रसोहैसुमानोकिनारा। रहीदूरिलौंफैलिहैचांदनीचारुज्योंगंगधारा॥ सजेचूनरीनीलनश्वांतिचंद्राननीबारदारा। करैचंद्रक्रीड़ामनोसंगलैशर्बरीसब्रतारा ४५ ॥ नीलछंद ॥ मोहनआननकीसुसुकानिअनूपसुधा। होतबिलोकिहजारमनोभवरूपमुधा॥ पीतपराप्रदासन्योछावरिबीजुछटा। नीलकलेवरऊपरकोटिकनीलघटा ४६ ॥ मोटनकछन्द ॥ मोहैमनुवेणुबजाइअली। मूसैउरअन्तरभांतिभली॥ कीजैकिनल्योतअगोटनको।

हैचोरयहीमनमोटनको ४७॥ दोहा ॥ भुजँगप्रयातहि आदिदै सबचौगुनोबनाउ। होतपरमसुखदानिहै भाषोभोगीराउ ४८॥ इतिश्रीदासकृतेछन्दोर्णवेबेगनबाहुल्यकेछन्दवर्णननामदशमस्तरंगः १०॥

अथवर्णसवैयाप्रकरण ॥ दोहा ॥ यकइसतेछब्बीसलगि वरणसवैयासाजु ॥ इकइकगणबाहुल्यकरि वरणयोपन्नगराजु १॥ लक्षण ॥ सातभहैमदिरागुरुअन्तहुदैलघुऔरचकोरकहौगुनि। ताहूगुरूकरिमत्तमयंदलहूमदिराशिरमानिनियेसुनि॥ आठकरोयभुजंगरलक्षियसोदुमिलातहिआभारहैपुनि। जाहिसुमोतियदामबनावहुभागरनआठकिरीटरचोचुनि। २॥ मदिराछन्द ॥ दीनअधीनकैपायँपरीहोअरीउपकारकोधावहितू। मेरीदयालखिहोहिप्रसन्नदयाउरअन्तरल्यावहितू॥ नैननकेहियकीविरहागिनिएकहिबारबुझावहितू। श्रीमनमोहनरूपसुधामदिरामदमोहिंछकावहितू ३॥ युक्तदूसरोमदिरा॥ चकोरछंद॥ सोहतहैतुलसीबनमेंरमिरासमनोहरनन्दकिशोर। चारिहूपासहैंगोपबधूमणिदासहियेमेंहुलासनथोर॥ कबलउरोजवतीनकोआननमोहननैनभ्रमैंजिमिभौंर। मोहनआननचन्दलखेबनितानकेलोचनचारुचकोर ४॥ मत्तगयंदछंद ॥ सुन्दरिशुभ्रसुबेषसुकेशसुश्रोणसुठौनिसुदन्तसुसैनी। तुङ्गतनीमृदुअङ्गकृशोदरीचन्द्रमुखीमृगशावकनैनी॥ सोनकोवासरुदासमिलैगुनगौरिप्रियानबलासुखदैनी। पीननितम्बवतीकरमोरुहमत्तगयन्दगतीपिकबैनी ५॥ मानिनीयथा ॥ प्रफुल्लितदासबसन्त

किफौजशिलीमुखभीरदेखावतिहै। जमातिप्रभञ्जनकी गहिपत्रनिमानबिभंजन्निधावतिहै॥ नयेदलदेखिहथ्या रनडारिभटैतियसंगलिभावतिहै। चढ़ाइकैभौंहकमान निमानिनिकाहेतूबैरवढ़ावतिहै ६॥ भुजंगछन्द॥ तुम्हैंदे खिबेकीमहाचाहबाढ़ीमिलापैबिचारैसराहैस्मरैजू। रहै बैठिन्यारोघटादेखिकारीबिहारीबिहारीबिहारीररैजू॥ भ ईकालबौरीसीदौरीफिरैआजुबैठीदशाईशकाधौंकरैजू। बिथामेंगसीसीभुजंगैडसीसीछरीसीभरीसीघरीसीभरैजू ७॥ छबीछन्द॥ बादिहीआइकैबीरमोऐनमैंबैनकेघाव कौवोकरैथावरी। आपनीतरत्रहीएकहीवाकह्योकौनकी वोकरैबातफैलावरी॥ दासहोकान्हदासीबिनामोलकीछां ड़िदीन्ह्योंसबैबंशबंशावरी। ज्ञानशिक्षानितासोजुदीर क्षियेलक्षियेजाहिप्रत्यक्षहीबावरी ८॥ दुर्मिलाछन्द॥ सखि तोमहँयाचनआईहौंमैंउपकारकैमोहिंजियावहितू। तो हिंतातकीसौंनिजभ्रातकीसौंयहबातनकाहूजनावहितू॥ तुवचेरीहौंहोउँगीदाससदाठकुरायनमेरीकहावहितू। क रिफन्दकछूमोहिंआरजनीसजनीब्रजचन्दमिलावहितू ९ आभारछन्द॥ येगेहकेलोगधौंकात्तिकीन्हानकोठानिहैंका लिहएककहीगौन। सम्बादकैबादिहीबावरीहोयकोआ जुआलीरहौठानेहीमौन॥ हौंजानतीहौंनधौंसीखकौनेद योनन्दकोलालगोपालधौंकौन। आभारह्यांद्वारकोता हिकोसौंपिकैमोहिंऔतोहिंह्यांराखतेभौन १०॥ मुक्तह राछन्द॥ पठावतधेनुदुहावनमोहिंनजाउँतौदेखिकरौतुम टेहु। छुटाइभज्योबछरायहबैरीसरूकरिहौंगहिल्याइ हौंगेहु॥ गईथकिदौरतदौरतदासखरोटलगेभइबिकल

देहु। चुरीगईचूरिभरीभइधूरिपश्योटुटिमुक्तहराग्रहलेहु ११॥ किरीटछन्द ॥ पायँनपीरियेपावरियाकटिकेशरियादुपटाछबिछाजित। गुंजमिलेगजमोतियहारमेंरीतिसितासितभांतिहैभाजित॥ अंगअपारप्रभाअवलोक्तहोतहुजारमनोभवलाजित। बालयशोमतिलालयेईजिनकेशिरमोरकिरीटबिराजित १२॥ लक्षण ॥ दोहा ॥ आठसगनगुरुमाधवी सुप्रियमालतीचाहि। सत्यनयोंमंजरिकहे सत्यभरोअलसाहि १३॥ माधवयथा ॥ बिनपण्डितग्रन्थप्रकाशनहींबिनग्रन्थनपावतखण्डितमाहै। जगचन्द्रबिनानबिराजतियामिनियामिनिहूबिनचन्द्रअमाहै॥ सुसमाहिकेदेखेतेसाधुताहोतिऔसाधुहीतेशुभहोतिसमाहै। छबिपावतहैमधुमाधवीतेमधुकोअतिमाधवीहूँसोंप्रभाहै १४ महिमागुणवंतकीदासबढ़ैअकसेजबरीक्षिकैदानजबाहिर। गुणवंतहुतेपुनिदानिहूँकोयशफैलतजातदिगंतकेबाहिर॥ जिमिमालतीसोंअतिनेहनिबाहेतेभौरभयोरसिकाईमेंजाहिर। अरुभौंरहुकोअतिआदरकीन्हेसुबासमेंमालतियोंभइमाहिर॥ १५॥ मंजरीयथा॥ बसंतसेआजुबनेब्रजराजसपल्लवलालछरीबरहाथे। सुकुण्डलकेमुक्ताबिचहैंमकरंदकिबुंदनकीछबिनाथे॥ मलिंदअनेकनघूँघरवारेप्रसूनघनेपहुँचीनमेंगाथे। गरेजिमिकिंशुकगुंजकिमालरसालकिमंजुलमंजिरमाथे १६॥ अरसातछन्द॥ सांतघरीहूँनहींबिलगात लजातऔबातगुनेनुमुकातहैं। तेरीसौंखातहौंलोचनरातकेसारसप्रातहूतेसरसातहैं॥ राधिकामाधोउठेपरभातहैं नयनअघातहैंपेखिप्रभातहैं। ला

गिगिरैअँगिरातजँभातभरैरसगातखरैअरसातहैं १७॥
इति श्रीदासकृतेछन्दोर्णवेसवैयाप्रकरणवर्णनन्नामएकादशस्तरंगः ११॥

अथ संस्कृतयोग्यपद्यवर्णनम्॥ दोहा॥ कहौंसंस्कृतयोग्यलखिपद्यरीतिसुखकन्द॥ गनलक्षणगननामभैंछन्दलक्षणैछन्द १॥ रुक्मवतीछन्द॥ रग्गनोकनौंसगनोगो। जानियेसोरुक्मवतीहो॥ पायमैनौअक्षरसोहै। तीनिऔछौमैंजतिजोहै २॥ यथा॥ लक्ष्मीकांपैनरईहै। राखतेसोजातभईहै॥ सोरहीनएकरतीजू। लङ्कहीजोरुक्मवतीजू ३॥ सालिनीछन्द॥ कनौंकनौंरग्गनोरग्गनोगो। जानोयाकोछन्दहैसालिनीहो॥ पायेपायेवरणएकादशोहै। चारैसातैबीचबिश्रामसोहै ४॥ यथा॥ बालाबेणीअद्भुतैब्यालिनी है। माधोनीकेगर्बकीघालिनी है॥ पीकेजीमैंप्रेमकीपालिनीहै। सौतैकेहीसर्वदाशालिनीहै ५॥ बातोर्मीछन्द॥ गोगीकनौंसगनोजगनो। बातोर्मीहैयहईछन्दबनो॥ सातैचौथैजतिहैचारुजामैं। पायेबनोदशऔएकतामैं ६॥ यथा॥ कैसैयाकोकहियेनेकुनाहीं। नीबीबांधीरहतीयाहिमाहीं॥ तातेऐसोबरणैबुद्धिमेरी। बातोर्मीहैसजनीलंकतेरी ७॥ इन्द्रवज्राउपेन्द्रवज्राछन्द॥ तक्कारकरनोसगनोयेगन्नो। हैइन्द्रवज्रादशएकवन्नो॥ उपेन्द्रवज्राजगनादिसोई। दुहूँमिलेपैउपजातिहोई ८॥ इन्द्रवज्रा यथा॥ एरीबड़ीजोगिरितेकहायो। सोचित्तपीकाइनसोगिरायो॥ सोहैअयानोमृदुजोकहैरी। हैइन्द्रवज्रामसकानितेरी ९ उपेन्द्रवज्राआदिको लघ

पढ़ेहोतहै १० उपजातिकोईतुकआदिलघुपढ़ें ११॥

उपस्थितछन्द ॥ कनोंसगनोपियगोपगन्नो। सोपस्थितो हैदशएकवन्नो॥ जगन्नुसगनोतक्कारुकरना। पयस्थित कहैंमनक्केप्रसन्ना १२॥ यथा॥ प्यारेप्रतिमानकहा करौंमैं। जोआपनआपनोंईनरोमैं॥ आलीदृढ़ईबहुते कियेहू। कोपस्थितिहीसुरैरहैनकेहू १३॥ पयस्थितछन्द॥ दुखोरुसुखकोहैदानिसोई। वहैहरतदूजोनकोई॥ नदा सजीमेंहूजेनिरासी। जोपयस्थितहैबैकुण्ठबासी १४॥

सालीछन्द॥ नन्दकरनोनन्दगोरगानोगो। नामयाको छन्दसालीकहोहो॥ चारिसातैदासविश्रामठानो। अ मरायेग्यारहोजोरिआनो १५॥ यथा॥ कान्हकीजो त्योंरतीखीसहोगी। मोहित्योहींधन्यआलीकहोगी॥ शूरकैसेजोरजानैंजियेमें। होइजाकेशेलसालीहियेमें १६॥ सुन्दरीछन्द॥ नगनभागनुभागनुरग्गना। चरण चारिहुसुंदरिशोभना॥ द्रुतबिलम्बितयाहिकोऊकहै। बरणबारहदासअचूकहै १७॥ यथा॥ अनमनीसजनी सबसंगकी। सुधिनतोहिरहीकछुअंगकी॥ दुखितमो हनलालमकुन्दरी। कुढ़गमानहिमानहिसुन्दरी १८॥

प्रमिताक्षरा॥ प्रियनंदनंदसगनोसगनो। प्रमिताक्षराहि पगनोपगनो॥ जतिबीचबीचभनिलेभनिले। दशदो इवर्णगनिलेगनिले १९॥ यथा॥ अँगियासगाढ़बलंदे जियकी। अरुनीलअंचलहुसोमढ़ीली॥ तिनबीच व्यक्तझलकैकुचयों। कवितानिबद्धप्रतिमाक्षरज्यों २०॥

बंशस्थबिलछन्द॥ जगन्नुकरनासगनोलगोलगो। सुछन्द बंशस्थबिलोपगोपगो॥ गोआदिकोबर्णसुइन्द्रवंशहै।

मिलैंदुघापैउपजातिअंशुहै २१ ॥ यथा ॥ सक्योतपरचीमहिमैनहोइजू । नतोहमारेंथलुलेइसोइजू ॥ नटीनबंशस्थबिलोकिसोहनी । कृतइन्द्रबंशोपरिविश्वमोहनी २२ ॥ इन्द्रबंशायथा ॥ जान्योतपस्वीमहिमैनहोयजू । नतोहमारोथलुलेइसोइजू ॥ नारीनबंशस्थबिलोकिसोहनी । कीइन्द्रबंशोपरिविश्वमोहनी २३ ॥ विश्वादेवीछन्द ॥ गोगोमोरूपोगोयगानैयगानै ॥ विश्वादेवीकेपायँमेंचित्तआनै ॥ सोहैआभैंबारहोबर्णजाके । बर्णोयेपांचोसातविश्रामताके २४ ॥ यथा ॥ सेऐंगौरीकेपायँमेंकीललाई । योगीकोहोतीयोगरागाधिकाई ॥ राजस्सोपावेशूरजेहोतसेवी । सोहागैवतीसेइकैविश्वदेवी २५ ॥ प्रभाछन्द ॥ द्विजबरपियरागिनीरागिनी । करतविमलचारुमंदाकिनी ॥ बहुतकहतहैंएहीहैप्रभा । दुदशबरणऔरधाहैअभा २६ ॥ यथा ॥ शिवशिरपरतोढरीगंगरी । तियकुचशिवपैत्रिवेणीढरी ॥ सुरसतियमुनामनोभामिनी । मुकुटगनप्रभासुमन्दाकिनी २७ ॥ मणिमालाछन्द ॥ कर्नापियकर्नाकर्नापियकर्ना । आधेबिश्रामोहैबारहबर्ना ॥ बींसैजहँमत्तासोहैअतिआला । भोगीपतिभाषेयाकोमणिमाला २८ ॥ यथा ॥ चन्द्रावलिगौरीपूजनलैजाती । कीजैकिनप्यारेसीरीअबछाती ॥ राधावहआवैएहोनँदलाला । जाकेहियसोहैनीकीमणिमाला २९ ॥ पुटछन्द ॥ तियद्विजबरकर्नोनन्दकर्नो । जतिबसुअरुचारेबीसबर्नो ॥ दशअरुविषयामेंवर्णराख्यो । अहिपतिपुटनामेछन्दभाख्यो ३० ॥ यथा ॥ नहिंब्रजपदिबातैंतूसुनावे । सखिमरतसमयमेंमोहिंज्यावै ॥ अमियस्रवतआलीआस्यते

रो। श्रवणपुटनपीवैप्राणमेरो ३१ ॥ ललिताछन्द ॥ तौश्र
अगैलपियनन्दनन्दगो। बिश्रामलेतपगपंचसत्तको॥
हैसुग्धदौरुदशबर्णदेहिरी। सानन्दजानिललिताहिले
हिरी ३२ ॥ यथा ॥ बंशीचुराइसुयकन्तमेंगई। कान्हैब
ताइइनकानमेंदई॥ जैसीविचित्रवृषभानुलाडिली। तै
सीप्रवीनललितासखीमिली ३३ ॥ हरिमुखछन्द ॥ द्विज
वरनन्दजगन्नुनन्दकनों। हरिमुखछन्दभुजंगराजबनों॥
दशअरुतीनिबरणचारुसोहै। षटश्ररुसातबिरामचि
त्तमोहै ३४ ॥ यथा ॥ बन्धहिनजेमृदुहासपासमाहीं।
बिधतहियेदृगबाणजासुनाहीं॥ धनिधनितेपर्मदासदा
कहावै। हरिमुखहेरिजुफेरिचेतुल्यावै ३५ ॥ प्रहर्षिणी ॥ मैं
जानोद्विजवररग्गनोयहैजू। याहीकोप्रहर्षिणीसवैकहै
जू॥ तीनेश्ररुबिरतिबिचारिपांचपांचो। तीनेश्ररुद
शअखरानिठीकयांचो ३६ ॥ यथा ॥ पायोतूरिसकरि
कौनसुखराधे। बोरीबैरीसनकौनबैरसाधे॥ तेरीतनुश्रँ
खियनअश्रुबर्षिणीहै। सौतिनकीजनिउमहाप्रहर्षिणीहै
३७ ॥ तनरुचिराछन्द ॥ लगैलगैद्विजबरगैलगो। भलेश्र
लीतनुरुचिफबैलगो॥ त्रयोदशबर्णनिसोप्रभावनी।
बिरामहैलखिनवचारिकोधनी ३८ ॥ यथा ॥ अनेकधा
मनमथवारिडारिये। कितीप्रभामरकतमेंबिचारिये॥
कहांचलैंजलधरज्योतिमन्दकी। सकैजुकैतनुरुचिराम
चन्द्रकी ३९ ॥ क्षमाछन्द ॥ नगननगनकनोंजगन्नुगोगो।
बिरतिबरणआठैसरैकहोहो॥ त्रिदशबरणनीकेकरोज
माजू। भुजगनृपतियाकोकहैक्षमाजू ४० ॥ यथा ॥ निज
बशबरनारीसत्तैजुपालै। मुवितरुणधनीकैभजैगोपालै॥

तबधनिधनिजीमेंकह्योपरैजू। जबसमरथह्वैकेक्षमाकरैजू ४१ ॥ मंजुभाषिणी ॥ सगनोजगन्नुसगनोजगन्नुहै। गसमेतितीनदशईबरन्नुहै ॥ षटसत्त्वबीचजतिरीतिराखिनी। मृदुछन्दहोतहैमंजुभाखिनी ४२ ॥ यथा ॥ वहरैनिराजबदनीनिहारिहौं। तबदासजन्मसुफलीबिचारिहौं ॥ अँखियांबिशालछबिकञ्जनाखिनी। बतियांरसालमृदुमंजुभाखिनी ४३ ॥ मन्दभाषिनी ॥ ध्वजाध्वजानन्दसगनोलगेलगे। त्रयोदशैबरन्नधरियेपगेपगे ॥ छसातकेबीचबिरामराखिनी। फणीकह्योछन्दसुमन्दभाखिनी ४४ ॥ यथा ॥ सुनोकरैकान्हबरबीनबादको। कियोकरैबांसुरिहुकेनिनादको ॥ बिनासुनेबैनतूअकन्दराखिनी। भलीलगेकोकिलउमन्दभाखिनी ४५ ॥ प्रभावती ॥ तकारगोद्विजबरनन्दरागिनो। तीनैदशैचरणनिश्रख्यरामनो ॥ चारैछहैतियबिषरामभावती। याकोकह्योअहिपतिहैप्रभावती ४६ ॥ यथा ॥ कैगोरसीवसनअरुदेहसबको। कीबोकरैदिनदिनग्वारिगर्बको ॥ जोपैनतोतजिउनचित्तभावती। केतीलखीशशिबदनीप्रभावती ४७ ॥ बसंततिलक ॥ कनोंजगन्नुसगनोसगनोपगन्नो। सोहैबसन्ततिलकादशचारिबन्नो ॥ आठैछहैबरणमेंजतिचारुराख्यो। भाष्योभुजंगपतिकोयहदासभाख्यो ४८ ॥ यथा ॥ कारीपलासतरुडारसबैभईहैं। लालीतहांकछुककिंशुककीठईहैं ॥ कैलाजग्योमदनुपावककोबिचारो। आयोबसन्ततिलकाननतोनिहारो ४९ ॥ अपराजिताछंद ॥ नगननगननन्दनंदधुजाधुजा। बिरतिसजातिचारुचारुदुजादुजा ॥ चतुर्दशाहिबर्णसोंपगअ्राजिता। भुजंगभाणितछन्दहै

अपराजिता ५० ॥ यथा ॥ बिनयसुनहिचण्डमुण्डबिनाशिनी । जनदुःखहरिकोटिचंद्रप्रकाशिनी ॥ शरणशरणहैसदासुखसाजिता । द्रवहिंद्रवहिंदासकोअपराजिता ५१ ॥ मालिनीछंद ॥ नगननगनकर्नोयोग्यगनोयगन्नो । बिरतिरचियआठैऔरसातैबरन्नो ॥ सुगनगुनिलैकेहारहीडालिनीहै । सरससुरसबेलीपालिनीमालिनीहै ५२ ॥ यथा ॥ रहतिउरप्रभातेस्वर्णकीकांतिफैली । बिहँसतिनिजआभाफेरिपावैचमेली ॥ सहजहिगुहिमालाबालकेकण्ठमेली । अद्भुतछबिछाकीमालिनीस्योंसहेली ५३ ॥ चन्द्रलेखाछंद ॥ चाख्योहाराधुजैकर्नोरग्गनोरग्गनाहै । गोसंयुक्तोदशैपांचैअरुयरापग्गनाहै ॥ चारैचारैमिलेसाततीनिबिश्रामदेखो । भोगीभाषैकहैदशोछन्दहैचन्द्रलेखो ५४ ॥ यथा ॥ राधाभूलेनजानोयोंहैलवन्यानमेरी । जेहातेहातिहारीसीतौप्रभाहैघनेरी ॥ भौंहैंऐसीकमानेहैंनैनसोकञ्जदेखो । नासाऐसोसुआतुरोडेआस्यसोचन्द्रलेखो ५५ ॥ प्रभद्रकछंद ॥ द्विजरगैलगैलपियननन्दनन्दहै । गुरुयुतआठसातबिश्रामबन्दहै ॥ पन्द्रहबरंनपायकरतेअनन्दहै । कहतप्रभद्रकाख्यअहिराजछन्दहै ५६ ॥ यथा ॥ रिसकरिलैसहायकरिदापदांकई । तबहुँनकालदण्डप्रतिबारबांकई ॥ जिमिहिंसुभायभाइप्रियरामभद्रको । दुखहरतादयालकरताप्रभद्रको ५७ ॥ चित्राछंद ॥ जोमैंदीजैआठोहारागोयकारोयकारो । आठैसातैदैबिश्रामोछन्दचित्राविचारो ॥ आठोदीहामाहींजीहाआशुहीदौरिजावै । भोगीभाषैत्योंहीयाकेपाठकीरीतिपावै ५८ ॥ यथा ॥ फूलेफूलेफूले

वारीसेजमेंजोविहारे । शीतेधूपेडाभेंकांटेमेंसुकयोंपाउँ
धारे ॥ शोचैभाषैरोवैभूखौकौशल्याऔसुमित्रा । कैसे
सेहैदुःखेसीताकोमलांगीविचित्रा ५९ ॥ मदनललिताछंद ॥
चाखोहारानगनसगनोकर्नानगनुहै । अंतेदीहादशरु
रसईवर्नापगनुहै ॥ चारेमेंअरुछहरुछहमेंविश्रामलहि
ये । भोगीभाषैमदनललितायोछंदकहिये ६० ॥ यथा ॥
होनेलागीगतिललितऔबातेंललितहैं । हावोभावोल
लितमिसरीमानोकलितहैं ॥ कानोलागीललितअति
हीदोऊट्टगरी । दीन्होआलीमदनललितातोअंगसिग
री ६१ ॥ प्रवरललिताछंद ॥ यगन्नीमोआनोनगनसगनो
गोयगन्नो । दशौछाहीजाकेचरणप्रतिमेंहोइवन्नो ॥ छहे
छाओचारोवरणमहियाहैविरामी । फणिन्दैभाष्योहैप्र
वरललिताछन्दनामी ६२ ॥ यथा ॥ तिहारेजोवा
सीमिलनहितहैचित्तुसाधा । कह्योमेरोमानोचलोउतही
बेगिराधा ॥ जहांगाढ़ीकुञ्जैतरणितनयातीरराजैं । गई
ह्यांहोदेख्योप्रवरललितान्हानकाजैं ६३ ॥ गरुडरुतछंद ॥
द्विजवररागनोनगनरागनोरागनो । गरुडरुतेभनो
वरणसोरहैपागनो ॥ विरतिविचारकैह्दयसातनवठानि
ये । भुजगमहीपकोहुकमदासजोमानिये ६४ ॥ यथा ॥
वृकतकिछागज्योंभजतवृद्धऔबालको । मृगपतिदेखि
ज्योंभजतभुण्डशुण्डालको ॥ हरहरकेकहेभजतपापको
व्यूहयों । गरुडरुतैसुनेभजतव्यालकोजूहज्यों ६५ ॥ पृथ्वी
छंद ॥ जगन्नुसगनाध्वजानगनरागनादोइजू । विरामवसु
वर्णमेंबहुरिनौहिमेंहोइजू ॥ चरणप्रतिदासजूवरणसत्र
हैंठीकहैं । अहीशखगनाथसोप्रकटछंदपृथ्वीकहैं ६६ ॥

यथा॥ समर्थजनकेमहूकरतमन्दजोकाजहैं। विशेषित्य
हिपालतेगहन्तछोड़तेलाजहैं॥ लियेअजहूँशंभुजूरहत
कालकूटैगरे। अजौंउरगनाथजूरहतशीशपृथ्वीधरें६७॥
मालाधरछन्द॥ नगनसगनाध्वजानगनरग्गनाअत्तरो।
भुजंगपतिभाषियोप्रकटछंदमालाधरो॥ विरतिवसुनो
कहैसुकविराजकेगोतजू। चरणगनिलीजियेबरणसत्रहै
होतजू६८॥ यथा॥ युवतिगिरिराजलषणकोगईदूल
है। विकलडरिकैभजीनिरखिशम्भुकोशूलहै॥ उरगत
नभूषणोवदनआकपनैंभरे। बसनगजपालकोमनुजमु
एडमालाधरे६९॥ शिखरिणीछन्द॥ पगन्नोमोआनोनगन्न
सगनोसोदसगनो। कहैभोगीराजाबरणदशऔसत्त
पगनो॥ छत्रिश्रामोपायेबहुरिछहओपंचकरिणी। ग
नोचारिउपायेंतबकहहुजूहैशिखरिणी ७०॥ यथा॥
मृगेंद्रेजीत्योहैगतिहिअरुनैनानिहरिणी। सुबेणीहींव्या
लैरुचिरगतिहीमत्तकरिणी॥ मिलोमाधवजूसोंसुचित्त
सजनीक्षैनिडरिणी। हरायेईतेरेबसतसिगरेयाशिखरि
णी७१॥ मन्दाक्रांता यथा॥ चार्योहारानगनसगनोरग्ग
नारग्गनङ्गा। मंदाक्रांताभुजगभनितासत्रहैवर्णसङ्गा॥
कीजैचौथेविरतिछठयेंफेरिकैसातयोंमें। आकनौंहैसतक
विन्हसोदासजूबातयोंमें ७२॥ यथा॥ कोमाधोनीनल
धरणिकोकहाकामनारी। केतीरम्भाविमलछबिहैकाति
लोत्ताबिचारी॥ राधाजूकेमारिसकहियेक्योंनरीजोपिता
को। मंदाक्रांताकरेउजिनहैउरवशीमेनकाको ७३॥ हरि
णीछंद॥ नगनसगनोकर्नौतकारभागनुराधरो। बिरति
वसुमैनोमेंसँभारिकैकरबोकरो॥ बरणदशऔसातहैपाय

मैंचित्तदैसुनो । फणिराजभाष्योयाछन्दकोहरिणीगुनो ७४॥ यथा ॥ लजितकरताजेहै अंभोजखंजनमीनके। बसतनिजजेहीसेंगोपाललालप्रवीनके ॥ फिरतबनमेंवैतो पालेपरेपशुहीनके । त्रियदृगनसेंकैसेनैनाकहोहरिणीनके ७५ ॥ द्रोहारिणीछंद ॥ चाखोहारानगरसगनोतकारकनोलगे । भोगीराजाभणितदशऔहैसातवनापगे ॥ विश्रामोकेदिशिमुनिन्हकोआनंदद्रोहारिणी । दासोभाषेसुनहुसुकवियोहैछंदद्रोहारिणी ७६ ॥ यथा ॥ मेघादेवीसुचितकरनीआनन्देविस्तारिणी । प्रायश्चित्तोबहुजनमकोदण्डाद्देमेंटारिणी ॥ दोषैखंडीदुरितहरणीसंतापसंहारिणी । राधामाधोचरितचरचासन्द्रोहद्रोहारिणी ७७ ॥ भाराक्रान्ताछन्द ॥ चाखोहारानगनसगनोजगणुजगणुगो । भोगीभाषैविरतिदशऔनिचारिपगणुजो ॥ चाखोपायेगनिगनिधरियेवरणसुसत्रहै । भाराक्रांताकहतजगमेंजुजनमुनत्रहै ७८ ॥ यथा ॥ नीकीलागैसरसकविताअलंकृतसूनियों । क्रीड़ामेंज्योंसुखदवनितासुवस्त्रविहूनियों ॥ नहींभावैअरसकबहूंसुधीनिएकोघरी । भाराक्रांताअभरननिज्योंविभूषितपूनरी ७९ ॥ कुसुमितलताबल्लिताछन्द ॥ कैपांचोहारामगनसगनोरगगनागोयदीजै । विश्रामोपांचैवहुरिछहमेंसातमेंफेरिकीजै ॥ पायँपाऔंमेंसमुभिधरिये वर्णअठ्ठारहैजू । भोगिन्द्रैभाष्योकुसुमितलताबल्लिता छन्दहैजू ८० ॥ यथा ॥ बंधूपोविंबोकमलतिलजूपाटलाऔचँबेली । चंपाकइसीरोघरिहिविचह्यां फूलिहैंएकबेली ॥ दीजैआयकोसुखदृगनिकोंकुजकेहोविहारी । बैठोह्यांदेखोकुसुमितलताबल्लिताफूल

वारी ८१ ॥ नन्दनछन्द ॥ दुजबरस्गगनोनगनरगगनोधुजारा गनो। जतिमुनिमेंभनोछहहुमेंठनोरूपाचैतनो॥ अहिप तियोंकहैचरणपालहैसुअठारहै।सबदुखकन्दनेसुकबिन न्दनेरच्योज्यौंचहै ८२ ॥ यथा॥ मनुसुनिमोंकह्योचहतजो दस्योबिथाकेगनै। तजिसबआसरैजगतकोकरैएहीतूध नै॥ भवभ्रमकोहनैभगतिसोसनैतनैऔमनै। यशुमतिन न्दनेगरुड़स्यन्दनेकरहिबंदने ८३॥ नाराचछन्द॥ नगनन गनरगगनोआगेहूतिनिदैरगगनो। विरतिनवहिमेंकरोब र्ण अठारहैपग्गनो॥ भणितभुजंगराजकोदासभाषैसुतो सांचहै। मदनबिशुखुपांचहैपष्ठमोंछन्दनाराचहै ८४॥ यथा॥ परमसुभटहोगन्योभावतीतोहिसोहारियो। निपट बिबशह्वैगयोहालबंदीदयोडारियो॥ कबहुँडरतना।हिंजेते गसौंतोपसोंकोटसों। करतबिकलताहितूनैननाराचकी चोटसों ८५॥ चित्रलेखाछन्द॥ चारयोहारनगननगनगो यगन्नायधारो। बिश्रामोहैचतुरबरणऔसातसातैंबिचा रो॥ पायमाहींगनिगनिधरियेबर्णअठारहैजू। जोभैआ नौभुजगन्नपातेयोंचित्रलेखाकहैजू ८६॥ यथा॥ इच्छा चारीसघनसदनकीयोबनाढ्याअरोगा। भर्त्ताहीनापरम छबिवतीधर्तुनारीसँयोगा॥ भोगीदातातरुणजननके पासमेंबालदेखो। तानारीसोसकुलधरमकोराखिबोचित्र लेखो ८७॥ सार्द्दूललिताछन्द॥ मोआनोसगनोजगन्नुस गनोतक्कारसगनो। बिश्रामोगनिवारहैबरणकोफेरिछग नो॥ हैअठारहैबरणदासलखियेचौपायन्नलिता। याकों नामधस्योभुजगपतिहीहैसार्द्दूललिता ८८॥ यथा॥ सालस्यानैनाउठीपलंगतेपांलागिरबिसों। हींमेंतेनच

लीचलीसदनकोऐंड़ाइछबिसों ॥ सोहेतेसिगरेसुभांतिबि गरेशृंगारबलिता। बक्ताभोजप्रफुल्लसाईलललिताबेनीबि गलिता ८९ ॥ सुधाछन्द ॥ लगोचारोहारानगनसगनोत कारसगनो। छबिश्रमैठानोछपुनिगनिकैतोफेरिछगनो ॥ दशैआठैबर्नासुकबिजनकोदातारसिधिको। सुधाबिन्दो छन्दैभुजगबर्णौहैयाहिबिधिको ९० ॥ यथा ॥ चलैंधीरे धीरेगतिहरतिहैसातेछिरदकी। उनींदेनैनासोंहरतिअ रुणताकोकनदकी ॥ किनारीमुक्कासोछबिबदनकीयाभां तिछलकै। सुधाबुन्दैमानोउफिनिशशिकैचौफेरिझल कै ९१ ॥ शार्दूलविक्रीडिताछन्द ॥ मोआनोसगनोजगन्नुस गनोकर्नायगन्नोधुनो। हेरोबारहसातमेंचहतहौबिश्राम कोसोधुजो ॥ देखेजासुरसालचालपदकीपद्मीरहैब्रीडि ते। बर्नाहैवोनईसईशसुनियेशार्दूलबिक्रीडिते ९२ ॥ यथा ॥ राजैकुंडललोलकानशशिकीसोहैललाटीकला। आछेअंगनिपीतबासबिलसैत्योंआँगुलीमेंछला ॥ ती खेअस्त्रअनेकहाथगिरिजालीन्हेमहाईडिते। आवैभां तिभलीबढ़ावतिचलीशार्दूलबिक्रीडिते ९३ ॥ फुल्लदाम छन्द ॥ हैपांचोहाशानगननगनगोरगन्नागोयजामे। पाये मेंबर्नादशअरुपाबशोजानियेफुल्लदामे ॥ बिश्रामोपां चोपुनिमुनिमह्निआसातमेंफेरिदीजै। फैलापोथाकोभुज गन्नृपतिहीदासजूजानिलीजै ९४ ॥ यथा ॥ ब्रह्माशंभु स्योसुरमुनिसिगरेध्यावतेजासुनामैं। जाकेजोरेकोसुनि यतकतहूंबीरदूजोधरामैं ॥ ताहीकोगोपीबिबशकरतिहैं नयनआरक्ततामैं। टेढ़ीभौंहैंबियकरगहिकैमारतीफुल्ल दामैं ९५ ॥ मेघविस्फूर्जितछन्द ॥ यगन्नोमोआनोनसनगग

नोरग्गनोरग्गनोगो। जहांपायेपायेवरणसिगरोवोनईसै गनोहो॥ छविश्रामोलैकैबहुरिछहऔसातसोंपूजितोहै। याहीछन्दोभाष्योभुजगन्नृपतिकोमेघविस्फूर्जितोहै ९६॥ यथा॥ थकयोंहैवासन्तीपौनबहिऔकोकिलाकूकिहारी। निशानाथोहास्योहननहितुकैचन्द्रिकातीक्ष्णभारी॥ न आवैगोप्यारोकरतिसखितूबादिसन्देहबौरी। सहैगोनी कीहीकठिनहियरामेघविस्फूर्जितौरी ९७॥ छायाछन्द॥ य गन्नामोआनोनगनसगनोकनौलगैगोलगै। विरामैदेछा मैबहुरिछहओसातैसुनीकोलगै॥ गनोयामेंवनोदशअ रुनवईपायेपायेबन्दुहै। फणीराजाबाणीचितुवरहितोछा यायहीछन्दहै ९८॥ यथा॥ लियोहाथैबंशीबसनपहिर्यो गोपालकोआपुही। नजानेक्योंपायोवर्णवहईकैशशिरज्यों जापुही॥ हँसैबोलैमानोकरतिअबहींक्रीड़ाहिविस्तार सी। यकान्तामेंकांतालखतिनिजयोंछायालियेआरसी ९९॥ सुरलाछन्द॥ चख्योहारायगन्नानगनेनगननन्दम गनो। सातोविश्रामकैकैपुनिकरिमुनिऔपञ्चगनो॥ ठानीजयदासआछोदशनवअरणोएकचरणो। भाषैश्री नागराजाइहिबिधिसुरसाछन्दतरणो १००॥ यथा॥ था नेदासैअकेलैपवनतनयकेनामफलको। नींदैजाकेमरो सेकलिकमलकोदुक्खदलको॥ फालैजानैपयोदैकिहिन किजिहिकोगाइसुरसा। जानैबुध्योबड़ाईविनयलघुतई एकसुरसा १०१॥ सुधाछन्द॥ यगन्नामोआनोनगनगनतें गनगोगोयगानो। छविश्रामैठानोमुनिपुनिकरिकैसात ईफरितानो॥ गनोपायेपायेगुरुलघुमिलिकैबर्णहैंदा सवीसै। सुधाग्राकोनामैमधुरसमुझिकैआपुराख्यो

अहीसे १०२ ॥ यथा ॥ बसैशम्भुमाथविमलशशिकला पेलिह्यांतेकढ़ीहै । मेरेहूम्राणीकोअमरकरतिहैसांचुयांतेबढ़ीहै ॥ कहैयाकोपानीगुनगनतनकोदासजान्योनजाको । खवैसीरोसोलोसुरसरिमहिआंस्वच्छसांचोसुधाको १०३ ॥ सर्वबदनाछन्द ॥ कर्नोकर्नोपगगन्नोद्विजवरसगनो । ठानोबिश्रामसातोपुनिमुनिरसहैबिश्रामपगनो ॥ बर्नाबीसेसँवारोचरणचरणमेंआनन्दसदनै । भोगीराजाबखान्योसकलबदनसीहैसर्वबदनै १०४ ॥ यथा ॥ पूजाकीजैयशोदाहरिहलधरकोमोमेगुनतिहो । बांधोमारोवृथाहीइनकोअपनोजायोगुनतिहो ॥ पालैमारेउपजावैसकलजगतूयहहैदैत्यकदनै । थाकेजाकेबखानैकरतसररुवतीस्योसर्वबदनै १०५ ॥ लग्धराछन्द ॥ त्यास्योहारायगन्नादुवरसगनोरग्गनाद्वैबिराजै । दीजैताअन्तहारोमुनिमुनिमुनिमेंतीनिबिश्रामभाजै ॥ दीन्हैबर्नाइक्कीसचरणचरणमेंभाँतिकोवृन्दभाजै । भाष्योभोगीशजूकोसकलछविभयोस्रग्धराछन्दछाजै १०६ ॥ यथा ॥ मणोलिहोमयूरोडमरुबृषभऔठ्यालहैसंगमाहीं । ताकेहैएकएकैअशनकरनकोपावतेघातनाहीं ॥ जागेहैभैबिचाख्योकुशलरहतिहैशम्भुजूकेघरैमें । माथेपियूषधारीशुभशिरनिकोस्रग्धरेहैगरेमें १०७ ॥ सरसीछन्द ॥ नगनजगन्नुनन्दभगनोसगनोसगनोलगेजगे । बिरतिविवेकएकदशमेंकरियेपगेपगे ॥ बरणएकीसदासदरसीदरसीदरसीरसीरसी । तिरतिसुबुद्धिछन्दसरसीसरसीसरसीरसीरसी १०८ ॥ यथा ॥ भँवरसुनाभिकोककुचहैत्रिबलीबिमलीतरंगहै । द्विभुजमृनालजा

निकरकोकमलैकहियेसुरंगहै ॥ लहतकपोलकम्बुस
रिकोअँखियाँझखियाँअनूपहै । चिकुरसेवारऋपजल
जूवन्तितामरसीस्वरूपहै १०९ ॥ भद्रकछन्द ॥ गोसगनोज
गन्नुसगनो जगन्नुसगनोजगन्नुसगनो । चारिनिदैविरा
मछगनोवहोरिछगनोवहोरिछगनो । बाइसहीविचारिमे
नमेंचहूंचरणमेंधस्योवरणमें । भद्रकहैरसाकरणमेंगुरा
गरनमेंसुन्योकरणमें ११० ॥ यथा ॥ कीजियेजूगोपाल
अरचागोपालचरचासदाहिसुनिये । सेटनकोमहाकलु
षकोदरिद्रदुखकोनऔरगुनिये ॥ जाहिरहैंसुरासुरानिल
हूगुरनिमेंचराचरनिमें । भद्रकहैयहीअरनमेंयहीटरनमें
यहीपरणमें १११ ॥ अद्रितनयाछन्द ॥ पियसगनोजगन्नुस
गनोजगन्नुसगनोजगन्नुभगनो । जतिसरदैवहोरिछगनो
वहोरिछगनोवहोरिछगनो ॥ गनिगनिकैत्रिवीसमनमेंच
हूचरणमेंधस्योवरणमें । गुनिगुनिकैजुअद्रितनयासु
अक्षरनमेंकह्योशरणमें ११२ ॥ यथा ॥ घटघटमेंतुहीवसति
हैतुहीवसतिहैस्वरूपमतिके । तुअमहिमाअरीरहतिहैस
दाहृदयमेंत्रिलोकपतिके ॥ निजजनकोबिनाभजनहूकले
शहननीबिथानिहननी । जयजयश्रीहिमाद्रितनयामहे
शघरनीगणेशजननी ११३ ॥ भुजङ्गविजृम्भितछन्द ॥ चारोहा
राचारोहाराद्दुजवरदुजसगनोजगन्नुजगन्नुगो । आठेमें
लेतोविश्रामेपुनिविरमनएकदशमेंकरोपुनिसातहो । पा
रामेंछवीसेंवर्नावरणितभुजगन्नपतिकोसुखाकरहैकितो ।
याकेनामेजानोचाहोचितुदैसुनोवचनतोभुजंगविजृम्भि
तो ११४ ॥ यथा ॥ साधूमेंसाधत्वैपैराहुविविधिविनयकरत
हूँनिरादरकीनेहूं । जैसेधेनुदुग्धैदेतीकटुतिनअसितचर

तहूंगुड़ादिकदीनेहूं ॥ संदेसोमन्दीयेहोतीजबतबजगत बिदितहैउपायकरोकितो। जैसेमिश्रीक्षीरैप्यायेबिसमय इवसनबहतहैभुजंगबिजृम्भितो ११५ ॥ इतिश्रीदासकृतेछन्दोर्णवेवर्णवृत्तश्लोकरीतिवर्णनंद्वादशस्तरंगः १२॥

अथअर्द्धसमवृत्ति ॥ दोहा ॥ पहिलोतीजोसमचरणदूजो चौथसमान। करोअर्द्धसमछन्दमेंइहिबिधिवृत्तिसुजान १ ॥ पुहपतिअग्रछन्द ॥ दुजवररागनोयगन्नो। दुजवरनन्दजगन्नुगोयगन्नो॥ पुहपतिअग्रछन्दबर्नो। बिषमदशैत्रिदशैसमेतिबर्नो २ ॥ यथा ॥ फिरिफिरिभ्रमिकैकहैनवेली। बिधियहकौनप्रकारचेमली ॥ रंगधरतिकनैलपाखुरीके। छुवतिजिपुष्पतिअग्गआँगुरीके ३ ॥ उपचित्रकछंद ॥ सगनासगनासगनालगो। भागनुभागनुभागनुकर्नो। अखराचहुपायनिग्यारहै। छन्दयहीउपचित्रकबर्नो ४ ॥ यथा ॥ नउठैकरजासुसलामसोबातकहैमिलऊतरनाहीं। नकरोदुखमानब्रजानिकैमित्रसुहैउपचित्रकमाहीं ५ ॥ वेगवतीछन्द ॥ सगनोसगनोलयगन्नो। भागनुभागनुभागनुकर्नो। बिषमेदशवर्णप्रपन्नो। वेगवतीसमग्यारहवन्नो ६ ॥ यथा ॥ मिटिगोअधरारंगक्योंहै ॥ बाढ़िगईबकबादघरीहै॥ सिगरोतनस्वेदसनोहै। तोडरआवतवेगवतीकैं ७॥ हरिणलुप्तछन्द॥ बिषमेंअखराइकहीनहै। सुनिसुन्दरिपायनिलीनहै ॥ भनिपन्नगराजप्रवीनहै। हरिणलुप्तसुछंदनवीनहै ८ ॥ यथा ॥ ब्रजकीवनितालखिपाइहै। इकहीकीइकईसलगाइहै ॥ मगरोकनिकीसजिवानिको। हरिनलुप्तकरोकुलकानिको ९ ॥ अपरवक्त्रछन्द ॥ दुवरसगनाजगन्नुगो। दुजवरगोसगनाजगन्नुगो ॥ शिवरबिअखरानिराखियो। सु

अपरचक्रभुजंगभाषियो १० ॥ यथा ॥ व्रजपतिइकचक्र कौधर्यो। त्रिभुवनकोनिजहाथमेंकर्यो ॥ तुअवशाशु अयोंविशेषिकै। तियविंयचक्रानितम्बदेखिकै ११ ॥ सुंदरछन्द ॥ सगनासगनाजगनागुरु। सगनाभगनारगनालगो॥ विषमेंअखरनदशोधरो। समपदग्यारहछंदसुंदरो १२ ॥ यथा ॥ पढिकैदहमोहनमंत्रको। सजनीशोधिशिंगारतंत्रको ॥ रचनाविधनाअनंगकी। सुखमासुंदरश्यामअंगकी १३ ॥ द्रुतमध्यकछंद ॥ भगनुतीनिगुरूवियदीजै। पुनिदुजभगनुगौलयकीजै॥ ग्यारहबारहआखरपाये। कहिद्रुतमध्यकछन्दसुभाये १४ ॥ यथा ॥ कौतुकआजुकियोवनमाली। जलविचकूदिपरेउसुनिआली ॥ नाथिफणीन्द्रहितोषफनिन्दी। प्रकटभयोद्रुतमध्यकलिन्दी १५ ॥ दुमिलामुखमदिरामुख ॥ दोहा ॥ समपदमदिरादुमिलाविषम दुमिलादुखपहिंचानि। उलटिसुमदिरामुखकहै इहिविधिऔरोजानि १६ होहिंविषमचारोंचरण विषमवृत्तिहैसोइ। वेदनिवीचप्रमाणनहिंभाषावरणैकोइ १७ ॥ इतिश्रीदासकृतेछन्दोर्णवेअर्द्धसमविषमछन्दवर्णनंनामत्रयोदशस्तरंगः १३ ॥

अथमुक्तकछंदवर्णन ॥ दोहा ॥ अक्षरकागणतीयदाकहुँकहुँ गुरुलघुनेम॥वरणचन्दमेंताहिकविमुक्तककहैंसप्रेम १ ॥ श्लोकतथा ॥ अनुष्टुपछन्द ॥ चारिआगेंधुजाएकैदूसरेंद्वैधुजाथपो। आठआठचहूँपायेश्लोकनामअनुष्टुपो २ ॥ यथा ॥ जनदीनदुखीकरताहरताभयभीरको। लोकतीनिहुँमेंफैलयौश्लोकश्रीरघुवीरको३ ॥ गाथाछन्द ॥ दोहा ॥ प्रथमचरण सत्रहवरणद्वितियअठारहआन। योहींतीजोचौथउगं

धाऊँदवसानु ४ ॥ यथा ॥ सुंदरितूक्षोंपहिरतिनगभूषण आसावली । ततद्युतितेरीसहजहीमशालप्रभावली ५ चोवाचंदनचंद्रकेंचाहेकहाखड़ावली । तेरेवातकहतकोसकलोंफैलैसुगंधावली ६ ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ दोहा ॥ वसुवसु वसुभनिजनिवरण घनाक्षरीयकतीस । चोवसुरूपघनाक्षरी बत्तिसगन्योफणीस ७ ॥ यथा ॥ जबहींतेदासमेरीनजरिपरीहैवहनवहींनेदेखिवेकीभूखभरसतिहै । होनलग्योवाहेरकलेशकोकलापउरअन्तरकीताप छिनहींछिननसतिहै ॥ चलदलपातसेउदरपरराजीरोमराजीकीवनकमेरेमनमेंवसनिहै । शृंगारमेंस्याहीसोंलिखीहैनीकीभांतिकाहूमनोयन्त्रपांतिघनअक्षरीलसनिहै ८ ॥ रूपघनाक्षरी छन्द ॥ दरशिपरशिवहतापकोहरतवहप्रमदाप्रवीणानिकोमोहिनकरतप्रान । वहबरसावैहियप्रेमरसबूँदनिकोवहमनुवेभावेचेचूकतनजगजान ॥ चारुचारुविधिकोविलोकिगुनचारिहूमेंतवदासप्यारेमेंविचारेउचारेउ उपमान । बदनसुधाधरअधरविम्बमेरीआलीस्वच्छतनरूपघनअक्षरीप्रबलवान ९ ॥ वर्णकुसुमाछन्द ॥ दोहा ॥ कहूँसगन कहुँयगनहै चौविसवरणप्रमान ॥ गुरुहेराखितुकंतमेंवरणभुजनाठान १० ॥ यथा ॥ अरीपानिपीवेनहींपानिछीवेनहींवासअरुवसनराखेननेरो । भरेउप्राणकेएनमेंनैनमंवेनमेंहैनगुणरूपअरुनामतेरो ॥ विरहवशऐसेहीहैवहौकेमहींराखिहैकेनहींप्राणमेरो । नितदासजुयाहिसँदेहकेभूलनाभूलतीचित्तगोपालकेरो ११ इतिश्रीदासकृते छंदोर्णवेमुक्तकछंदवर्णनंनामचतुर्दशस्तरंगः १४॥

अथदंडकभेद ॥ दोहा ॥ द्वैनसातयग्गनरचित दण्डकचर णनिदेखि।चरणचरणनवसगनमयकुसमस्तवकविशेखि १ प्रचितदंडक ॥ जयतिजैसुखदानीअविद्यानिदानीसुविद्या निधानीररैवेदबानी।शरणतुवशरणम्रानीमहेन्द्रीमृड़ानी दयाशीलसानीतिहूंलोकरानी॥धनिजगतत्यहिंबखानीव हैभाग्यमानीवहीसन्तजानीवहीधीरज्ञानी।प्रचितकहत जुप्रानीनमस्तेभवानीनमस्तेभवानीनमस्तेभवानी २॥ कुसमस्तवकदण्डक ॥ सखिशोभितश्रीनँदलालभयेनिकसेब नतेबनितागनसंगजबै । हरिसाथउरोजवतीनिकेहाथ नियाहिप्रभाहिंधरेगुलदस्तफबै ॥ हरिजूकेहराइबेकोब हुतीरतलासकरोअनुमानिकैदासअबै । चितपायतेले लेमिलीहैमनोकुसमस्तवकैकुसमयखकीसैनसबै ३ ॥ अनं गशेषरदण्डक ॥ दोहा ॥ चारिदशैकैपन्द्रहै कैसोरहुधुजपाइ। लखिअनंगशेषरकहो दण्डकभोगीराइ ४ ॥ यथा ॥ त्रि लोकिराजभवनकेबनाउकोबिधातउअमैनदासाचित्तधीर कैसेहूधरेरहैं । तहांघरीघरीगोपालवृन्दवृन्दसुन्दरीन जाइजाइसंगलैतमालसेअरेरहैं ॥ परेविचित्रछाहैवेज हांछजेजराउसेसमूहआरसीनिकेदिवालमेंजरेरहैं । प्रभा निहारिकान्हकीछकेसकैनछांड़िसंगसेनस्योचहूँदिशाअ नंगसेखरेरहैं ५ ॥ अशोकपुष्पमंजरीछन्द ॥ दोहा ॥ यामेंपन्द्रहव र्णहैं अन्तगुरूसोकाम । तादंडकहिअशोकयुत पुष्पमंज रीनाम ६ ॥ यथा ॥ ऊभिऊभिइवासलेतयोसजोटरेउकहूं टरैनकालरातिसीकरालआइशर्वरी।दासईशओसलपत्त लसीलगैशरीरसपंइत्राससीलगैबयारियोंघरीघरी ॥ रा वरेबियोगरामसुक्खदानि बस्तुसर्वदुःखदानिसीयकोप

कुंकुहीदईकरी॥भानुसोहिमांशुभोकृशानुसोसरोजपुंजशोकभूरिकोभरैअशोकपुष्पमंजरी ७॥ त्रिभंगदण्डक ॥ दोहा ॥ पंचविप्रभागनुदुगुरुसदोनन्दगोठाउँ। चरणचरणचौंतिसबरणबरणात्रिभंगीगाउँ ८॥ यथा॥ सजलजलदजनुलसताबिमलतनुश्रमकनत्यौंझलकोहैंउमागोहैबुंदमनोहैं। भुवयुगमटकनिफिरिफिरिलटकनि अनमिषनयननिजोहैं हर्षोहैहैमनमोहैं॥ पगिपगिपुनिपुनिखिनखिनसुनिसुनिमृदुमृदुतालमृदंगीमुरचंगीझांझडपंगी। बरहिबरहधरिअमितकलनिकरिनचतअहीरनसंगीबहुरंगी लालत्रिभंगी ९॥ मत्तमातंगलीलाकरदण्डक ॥ दोहा ॥ पायकरोनौरगनतेचौदहलोंचितचाहि। नाममत्तमातंगकोलीलाकरकहिताहि १०॥ यथा॥ पाइविद्यानिकोछन्दजूभारतीलयाइसानन्दजूमानुषीकृत्तिसोवृन्दजूछन्दछीलाकरैतोकहा। ह्वैमहीपालकोमोरआखेटमेंसांझह्वैभोरलोलीनकरसीनकीदौरपक्षीलजीनकरैतोकहा॥ शुभ्रशोभासबैअंगमेंसुन्दरीसर्वदासंगमेंलीनह्वै रागऔरंगमेंनृत्यकीलीलाकरैतौकहा। जोनहींठानिकैतत्तुभौरामलीलाहिसोरत्ततोबाहरेसैकरैमत्तमातंगलीलाकरैतोकहा ११॥ अथ दण्डकभेद ॥ कुण्डलिया ॥ दोइनगनकरिसातईरगनदेहुप्रतिपाइ। चण्डवृष्टिप्रयातयोंदंडकरचोबनाइ॥ दण्डकरचोबनाइ आठरग्गनकोअर्नो। नौअर्नोदशब्यालरुद्रजीमूतहिबर्नो॥ लीलाकरबारहउद्यामतेरहैकहोइन। दासचतुर्दशशंखसबनिशिरचाहियदोइन। एकैकबितबनाइकैगणगणपरतुकल्याइ। दासकहैयोंआठऊउदाहरणदरसाइ १२॥ यथा॥ शरणशरणहीसदात

हिकीनोकृपासिंधुगोपालगोविन्ददामोदरो विष्णुजूमाधवोश्यामजूऔरवभूसुक्खदासनुहैदासको । सदयहृदयकैहमैंपालिहैआपनोजानिकैसोइविश्वेशविश्वंभरो विष्णुजूराघवोरामजूऔप्रभूदुक्खहाहनुहैत्रासको । सुयशविदितजासुसंसारकेबीचमेंसर्बदाईशहैदेवदेवेशको धसैंहैपालिबोज्याइबोमारिबोजोगनोहैचहूवेदमें । भजनकरियचित्तमेंताहिकोनित्यहीदानिहैसिद्धको लोकलोकेशको कर्महैघालिबोज्याइबोतारिबोसोभनोक्योंलहोभेदमें १३ ॥ दोहा ॥ छंदनिदोहरोचौहरो करिनिजबुद्धिविवेक।मनरोचकतुकआनिकै दण्डकरचोअनेक ॥ रागनकेवशकीजिये ताहिप्रबंधबखानि । छंदलियेसोपद्यहै गद्यछंदबिनजानि॥ग्यारहतेछब्बीसलगिबरणदुपदतुकएक।सोशिरदैबहुछंददल परेप्रबंधविवेक॥ भेदछंददंडकनिको दोऊपारावार।बरणनपंथबताइये दीन्हींमतिअनुसार॥ सत्रहसैनिन्नानबे मधुबदिनवैकबिंदु।दासकियोछंदोर्णव सुमिरिसांवरोइंदु ॥ घनेदिननकोग्रंथयह बिगर्योहतोबनाइ । ताहिसुधार्योशुद्धकरि दुर्गादत्तचितलाइ॥ आदौजैपुरनगरको अबकाशीमेंबास । भाषासंस्कृतदुहुनमेंराखहुँअतिअभ्यास ॥ गौड़ाद्विजवरजाहिरो दुर्गादत्तसुनाम । प्राचीननकेग्रंथको शोधेहुचारोयाम ॥

इतिश्रीदासकृतेछंदोर्णवेदण्डकभेदवर्णनंनाम पंचदशस्तरङ्गः १५ ॥

इति पिंगलग्रन्थभिषारीदासकृतसम्पूर्णम् ॥

श्री[illegible]किशोर (सी,आई,ई.) के छापेखाने में छापागया
नवम्बर सन् १९०२ ई० ॥